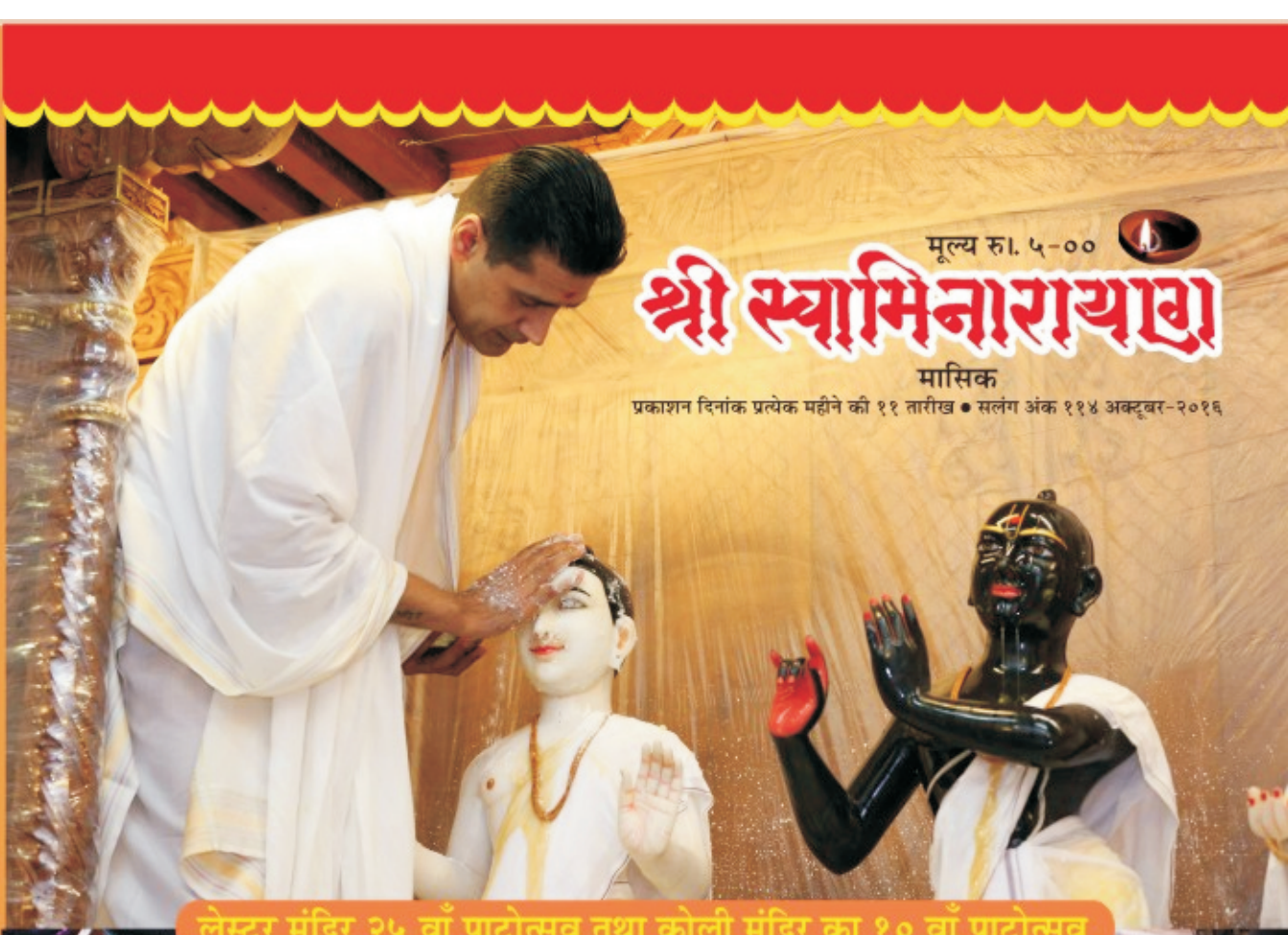

मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक ११४ अक्टूबर-२०१६

लेस्टर मंदिर २५ वाँ पाटोत्सव तथा क्रोली मंदिर का १० वाँ पाटोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

પ.પૂ.૫.પૂ. આચાર્યશ્રી ૧૦૦૮
શ્રીકોશલેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. મોટા મહારાજશ્રી
શ્રી તેજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

પ.પૂ. લાલજી મહારાજ
શ્રી વ્રજેન્દ્રપ્રસાદજી મહારાજશ્રી

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १० ● अंक : ११४

अक्टूबर-२०१६

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्रीफल	०६
०४.	श्रीहरि के स्वरुप का चिन्तन	०८
०५.	कृतघ्नी	१२
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०७.	सत्संग बालवाटिका	१६
०८.	भक्ति सुधा	१७
१९.	सत्संग समाचार	२०

अस्मदीयम्

समय समय पर जो हो वही सही । समय बीत जाने के बाद पछतावा होता है, लेकिन उससे क्या फायदा । सर्वावतारी भगवान श्री स्वामिनारायणने हम सभी को चोरासी लाख योनियों में से निकलने का औह मनुष्य शरीर को प्राप्त करने का जो उपकार किया वह हम सभी की भाग्य है, इतना ही नहीं, उन्हीं की कृपा से हम सभी को सत्संग भी मिला है । जो सत्संग अन्यत्र के जागतिक लोगों के लिये अत्यन्त दुर्लभ है । फिर भी हम यह वात जानते हुये भी संसार के चक्र में फंसते जाते है । हमें शास्त्रो का ज्ञान है, समझ है फिर भी भगवान को पहचान नहीं सके । यह शरीर क्षणभंगुर है, कब गिर जायेगी इसका किसी को पता भी नहीं है । इसलिये आज से ही निश्चित कर लेना चाहिये कि हम अब किसी बन्धन में प्रसंगे नहीं । यदि कहीं फंसेगे तो मात्र श्रीहरि के प्रेम में । रात दिन भगवान की भजन करके अक्षरधाम में जायेंगे यह भाव रहेगा तभी भजन हो सकेगी । हम प्रतिदिन श्रीजी महाराज को प्रार्थना करें कि, हमारा सत्संग नित्य प्रति वृद्धि को प्राप्त हो । इस के अलांवा आपके स्वरुप में अखंड वृत्ति बनी रहे । अने सत्संग मां जेने वधारो थवानो होय तेने शुभ वासना वृद्दि पामे छे । त्यारे तेने दिवसे दिवसे सत्संगी मात्र ना हृदय मा गुणज आवे अने सर्वे हरिभक्तोने मोटा समजे । अने पोताने न्यून समजे ने आठे पहोर तेना हैयामां सत्संग नो आनंद वर्त्या करे । एवा लक्षण ज्यारे होय त्यारे जाणीये ने शुभ वासना वृद्धि पामी छे । अने ते जेम जेम वधु सत्संग करे तेम तेम वधु समास थतो जाय अने अतिशे मोटपने पामी जाय छे ।(व.ग.प्र.प्र. २८)

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी वाचकों को श्रीहरि स्मृति के साथ संवत २०७३ के नूतन वर्ष का वर्षाभिनंदन के साथ हमारा खूब प्रेमपूर्वक जयश्री स्वामिनारायण ।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

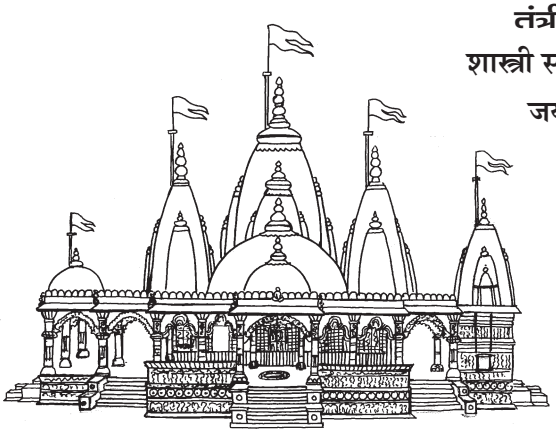

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(सितम्बर-२०१६)

३१ अगस्त से ६ सितम्बर तक श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया (आई.एस.एस.ओ.) अमेरिका पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

६ से १२ लंदन लेस्टर (आई.एस.एस.ओ.) श्री स्वामिनारायण मंदिर रजत जयंती पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

श्री स्वामिनारायण मंदिर क्रोली होटवीक (आई.एस.एस.ओ.) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर अमदावाद जलझीलणी एकादशी को श्री गणपतिजी के शोभायात्रा प्रसंग पर पदार्पण।

२१ से ३० अमेरिका पदार्पण।

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

अपने शास्त्र में श्रीफल को चिंतामणी का उपनाम दिया गया है । पुराणो में श्रीफल के विषय में खूब महत्व बताया गया है । सभी उपासना मार्ग वाले इसका सर्वश्रेष्ठ फल कहे हैं । धार्मिक-व्यावहारिक, मांगलिक सभी प्रसंग में श्रीफल का अग्रस्थान रहता है । इसीलिये देव-देवी का प्रतीक मानकर पूजा जाता है । श्रीफल सर्वमान्य सर्व ग्राह्य-निर्विवाद प्राचीन परंपरा से ग्राह्य माना गया है ।

श्रीफल की उत्पत्ति के विषय में अनेक प्रसंग मिलते है । जैसे परमात्मा की आज्ञा से जगतसृष्टि ब्रह्माजीने जगत की सृष्टि की जिस में कर्मफल तथा मोक्षमार्ग को सिद्ध करने के लिये मनुष्य की सृष्टि की । उस समय ब्रह्माजी के मानसपुत्र विश्वामित्र ऋषि अपने तपोबल से दूसरी सृष्टि करने को तैयार हो गये । उनके तपोबल से सभी देवी-देवता परिचित थे । अर्थात् वे जो चाहे वह कर सकते थे । लेकिन परमात्मा की सृष्टि के साथ दूसरी सृष्टि हो तो परिणाम विपरीत आता है । विश्वामित्र सर्वसमर्थ होते हुये भी परमात्मा की इच्छा नहीं थी इसलिये सृष्टि का कार्य नहीं किये ।

पुनः सृष्टि करने की इच्छा से तैयारी किये तो सभी देवी-देवता भयभीत हो गये । विश्वामित्र के पास जाकर इस तरह का जगत सर्जन न करने की प्रार्थना किये ।

परंतु ऋषि बलवान संकल्प किये थे, यह कार्य न हो तो भी हानि की संभावना अधिक थी, इसलिये संकल्प पूरा करने के लिये जगत से बाहर तथा जगत के भीतर लेकिन जगत के आकार का सभी तत्वो से परिपूर्ण श्रीफल (नारियल) को प्रगट किये । जिसे हम लोग आज नारियल कहते हैं । संस्कृत में नारिकेल कहते है । जिसे हम लोग आज नारियल कहते हैं । एकवार लक्ष्मी तथा नारायण सागर के किनारे विचरण कर रहे थे । चलते-चलते दूर जंगल में पहुंच गये । उसी समय नारायण को तृषा लगी, कंठ सूखा गया, बेहोश हो गये, वहाँ घर जलाशय कही दिखाई नहीं दिया । लक्ष्मीजी ताडके फल (नारियल) को लाकर उसका जल पिलाई तो भगवान को होश आ गया और प्रसन्न होकर कहे कि देवी, आपने इस फल का जल पिलाकर जीवनदान दिया है, इसलिये यह फल हमें अतिप्रिय स्मरण रुप बनकर रहेगा । इसे हम आपके जैसा फल मानेंगे । श्री अर्थात् लक्ष्मी, उसी समय भगवानने उसका श्रीफल नाम रख दिया । वरदान भी दिये कि जो श्रीफल से पूजा करेगें, श्रीफल अर्पण करेंगे उनकी सर्व सर्वका मनोकामना पूर्ण करेंगे । ऐसी एक लीला का प्रसंग इस श्रीफल के इतिहास में छिपा हुआ है ।

सूखे नारियल को छोला जाय तो उसमें तीन नेत्र दिखाई देगा । उसे दो आंख तथा एक मुख माना जाता है । दश हजार में सो एक एकाक्षी श्रीफल मिल जाता है । उसका आध्यात्मिक दृष्टि से खूब महत्व है । उसे भाग्यवर्धक, संपत्तिकारक, सौभाग्यवर्धक, धन, ऐश्वर्य, सुख, समृद्धि के साथ आनंद देनेवाला कहा गया है । एकाक्षी श्रीफल लक्ष्मीजी को प्रिय है । जहाँ पर इस तरह का श्रीफल होता है वहाँ पर लक्ष्मीजी का एकवास रहता है । ऐसे घर में किसी प्रकार का यंत्र-मंत्र-तंत्र, जादू-होना काम नहीं करते । इसके अलावा अष्टसिद्धि के लिये एकाक्षी पूजा सर्वोत्तम है । जिस तरह शालीग्राम में विष्णु भगवान का नर्मदाजी के पत्थर में शिवजी का, तुलसीजी के वृक्ष में लक्ष्मीजी का वास रहता है, उसी तरह एकाक्षी श्रीफल में लक्ष्मीजी का अखंड वास रहता है । इसमें आहवान विसर्जन करने की आवश्यकता नहीं होती ।

वैदिक तथा पौराणिक पूजा विधिमें श्रीफल अनिवार्य माना जाता है । मांगलिक कार्यो में श्रीफल को समर्पित किया जाता है । कितने लोग श्रीफल की मान्यता रखते हैं । भगवान को प्रिय होने से हनुमानजी को अतिशय प्रिय है । इसीलिये हनुमानजी को भक्त लोग श्रीफल-चढाते हैं । आदिकाल में जब मूर्ति पूजा का प्रचलन नही था तब साधक-श्रीफल में अपने इष्ट देव का आहवान करके पूजा करते थे । इसीलिये आज भी देवी-देवता के सामने नारियल रखकर पूजन किया जाता है । यज्ञयादि कर्म में

पूर्णाहुति के समय अग्निदेव को तथा उन उन देवो को श्रीफल की आहुति दी जाती है। वह इसलिये हवनकार्य में जो कमी रहगई हो वह श्रीफल के होने से पूर्ण हो जाता है। कलश स्थापनमें घटस्थापन में, विवाह कर्म में श्रीफल अवश्य रखा जाता है। कितने लोग चांदी में मढकर रखते है ।

बजार में सबसे सस्ता मिलने वाला श्रीफल आध्यात्मिक तथा आरोग्य की दृष्टि से अति महत्वका है। श्रीफल का वृक्ष प्राय: समुद्र के किनारे मिलता है। समुद्र समृद्धि का खजाना है। इसीलिये विधिकहा जाता है। यह श्रीफल भी समुद्र के किनारे होने से समुद्र का खजाना कहा जायेगा। यद्यपि समुद्र में अनमोल बहुत सारे रत्न है, लेकिन किनारे का रत्न श्रीफल है।

मंदिरो में कलश के ऊपर श्रीफल रखा जाता है। जो आज के समय में तांबा-पीतल का हो गया है। वास्तव में मंदिर के अंतिम शिखर पर पूर्णता का प्रतीक श्रीफल को रखा जाता है। शिल्प शास्त्र के अनुसार यह परंपरा में देखी जाती है।

पहले के जमाने में मुमुक्षु भगवान का गुरु से जब मिलने जाते थे तब भेंट के रुप में श्रीफल लेकर जाते थे। विवाहादिक कार्य में सर्व प्रथम श्रीफल भेंट में दिया जाता है। स्वामिनारायण भगवान को एक भक्त खराब श्रीफल चरण में भेट करके कल्याण मांग लिया। उस व्यक्ति की आध्यात्मिकता ने श्रीफल के रुप में पूर्ण हो गयी। आरोग्य के लिये श्रीफल में बिटामिन, पोटेशियम, काईबर, केल्शियम, मेग्नेशियम इत्यादि की विशेष मात्रा रहती है। एक साथ इतना तत्व अन्य किसी फल में नही मिलता। इसलिये विद्वान लोग औषधियों का राजा कहते है। इसके लाभ की चर्चा गूगल में तथा आयुर्वेद के शास्त्रो में खूब की गई है। उसमें नारियल के तेल की खूबी बताई गई है।

पुराणों में दान विधिके समय श्रीफल का दान सबसे उत्तम बताया गया है। श्रीफल का जल सूख जाने के बाद भी उसका महत्व कम नहीं होगा। एकाक्षी के सिवाय घर की पूजा में जो नारियल रखा जाता है उसे प्रतिवर्ष बदल देना चाहिये । नया पूजा में रखकर पुराने को पानी में विसर्जित करना चाहिये। जहाँ पर प्रमाणित मूर्ति की पूजा हो रही हो वहाँ पर श्रीफल रखने की कोई आवश्यकता नहीं है। श्रीफल को परंपरा के अनुसार देव०देवी के चरणों में रखा जाता है। इसके अलांवा उसके जलका छिटकाव भी किया जाता है।

श्रीफल को प्रसाद के रुप में भी वितरण किया जाता है। श्रीफल सौभाग्य का प्रतीक है इसलिये ये स्त्रियां उसे भगवान को चढा सकती है, लेकिन फोड़कर चढा नही सकती। ऐसा करने से उसके सौभाग्य के खंडित होने का भय है। इसलिये स्त्रियां इस वात का अवश्य ध्यान रखें। यदि भक्तों को नारियल के पानी का उपयोग करना हो तो भगवान को चढाकर कर सकते हैं।

श्रीफळ का छिकला, गर्भ, जल सभी अनेक तत्वों से परिपूर्ण है। शक्ति-भक्ति-इत्यादि को देनेवाला है। उस में भी जल तो नया जीवन देने वाला है। दीपावली के समय श्रीफल के पूजन का खूब महत्व है। इसीलिये स्थाई संपत्ति, ऐश्वर्य बल-बुद्धि देनेवाला है।

श्रीफळ में श्री लक्ष्मीजी का वास है। इसलिये सभी भक्त जब श्रीफल परमात्मा को अर्पण करते हैं तब यदि भाव रहता है कि हे परमात्मा। यह श्रीफल रुपी लक्ष्मीजी की संपत्ति आपकी है, हमारा इससे कुछ भी नहीं है। इसलिये इसे स्वीकार कीजिये । इसमें निर्मानीपना का भाव, निरहंकारीपना का भाव आता है। यथार्थ समझ तो यह है कि यह जो भी संपत्ति है वह परमात्मा की है, उसमें बधना नहीं चाहिये, इससे भावना दृढ होगी। श्रीफल की तरह धर्म-नियम का पालन करने में ऊपर से कठोर होना चाहिए। जगत की परवाह नहीं करनी चाहिये। लेकिन अंदर से तो नारियल के पानी की तरह प्रेमवाला ही रहना चाहिये। प्रभु में प्रेम से तरबोर रहना चाहिए। इस प्रकार की उत्तम समझ श्रीफल देता है।

नये महंत स्वामी की नियुक्ति

धोलका : श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका के महंत पद पर स.गु. स्वामी जगदीशप्रसाददासजी गुरु स.गु. स्वामी कृष्णजीवनदासजी की नियुक्ति की गई है।

ईडर : श्री स्वामिारायण मंदिर ईडर के महंत पद पर स.गु.शा.स्वा. सिध्धेश्वरदासजी गुरु स.गु. स्वामी लक्ष्मीप्रसाददासजी की नियुक्ति की गई है।

श्रीहरि के स्वरुप का चिन्तन

– स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजी (अमदावाद)

भगवान श्री स्वामिनारायण के दिव्य अंगो का दर्शन-चिंतन करने से चित्त की वृत्ति एकाग्र होती है, उसी समय परमात्मा के साक्षात्कार का लाभ जीवात्मा को होता है। इसी का यथार्थ तथ्य का ध्यान रख करके ही परमहंस लोग उस परमात्मा का चिंतन करते रहते थे। इसी तरह जब ब्रह्मानंद स्वामी, प्रेम सखी प्रेमानंद स्वामी या वासुदेव वर्णी प्रभु के ध्यान में मग्न होकर पद गाते तब प्रभु प्रसन्न होकर सामने से उनसे मिलने आते और गले से भेंटते – अनेकों आशीर्वाद देते। जैसे ब्रह्मानंद स्वामी को ऐसा वरदान दिये कि आपके बनाये गये पदों में से १०० पद का जो गान करेगा उसे हम साक्षात् दर्शन देंगे। इसी तरह श्री वासुदेवानंदजी को वरदान देकर कहे कि आपके बनाये गये संस्कृत भाषा में जो अष्टक है, उन का अर्थ के साथ पाठ करने वाले को हम प्रत्यक्ष दर्शन देंगे ऐसे सुंदर अष्टक का गान करने से कितने संत तथा भक्त को प्रभु का दुर्लभ दिव्य दर्शन हुआ।

ऐसे दिव्य दर्शन की इच्छा वाले भक्त नंद संतो द्वारा रचित कीर्तन या अष्टक का यदि गान करें तो महाराज के समकालीन नंद संतो को जो सुख मिलता था वह आज अन्यों को भी मिलेगा। अनुभवी संत तथा भक्तों के अनुभव से जो उपाय सीखने को मिलती है वह यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं –

जिन भक्तों को अष्टक या कीर्तन गाकर श्रीहरि को प्रसन्न करना है वे अपने मनोकूल कीर्तन-अष्टक को पसन्द करके अच्छी तरह स्वर में गायें। गाते गाते श्रीहरि की मूर्ति में एक रस हो जाना चाहिए। अगल बगल में कौन बैठा है, सामने वाला क्या बोल रहा है। उस के ऊपर ध्यान विना रखे अपने चित्त को परमात्मा में लगाकर गान करना चाहिए। अपना प्रिय गान करने के बाद एक-एक करके १०० पद प्रतिदिन गान करने से श्रीहरि की प्रसन्नता का दर्शन अवश्य मिलेगा। संस्कृत में जो अष्टक लिखे गये है और जिस राग में लिखे गये हैं उसी राग में गाना चाहिए। संस्कृत में गाने से सद्य. फलकारक होता है। इसका कारण यह है कि संस्कृत में की गई रचना सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान की स्तुति है अर्थात् उन्हीं का वर्णन है। वहाँ पर परोक्षरुप में कहाँ भगवान नहीं कहा गया है। इसके अलांवा एक विशेषता यह भी है वर्णिराज श्री वासुदेवानंदजी का वचन सत्य होता है, इसमें शंका का स्थान नहीं है। इसमें सरलता यह है कि अष्टक आठ शास्त्रो में होता है और उसमे सभी प्रभु के गुण-धर्म वर्णित हो जाते है सभी प्रभु के भाव अभिव्यक्त होने से पूर्ण फल कीप्राप्ति होती है, यह अनुभव सिद्ध है।

अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिपति सर्वावतारी पूर्णपुरुषोत्तम भगवान श्री स्वामिनारायण की मूर्ति का वर्णन संतोने सरल भाषा में तथा भावात्मक ढंग से किया है। इतना सुंदर उपमा दिया है कि रुप में लावण्यता उभरकर बाहर आजाती है। भाव भरी कविता जब हृदय में उतरती है तब हृदय आनंद से भरजाता है। इसी लिये निष्का मानंदजी की रचना का एक अष्टक – ''मानस चिन्त'' के अर्थ का विचार करों तो महाराज के अंग कैसे है। तथा उसके लिये कितनी सुंदर उपमा दी गई है। दासत्व भाव से अंगो का वर्णन किया गया है। पहले मस्तक से प्रारंभ चरण तक समाप्त करके दासत्व भाव को प्रगट किया गया है। रुप तथा लीला का गान करने के लिये पीलु छन्द राग (मालकोस) अष्टपदी में रचना की गई है। जो मधूरता तथा गंभीरता का भाव दर्शित करती है।

॥ पीलु रागेण गीमते ॥ अष्टपदी ॥

मानस चिन्तय चारु चरित्रम्,

प्रेमवती वृष पुत्रं पवित्रम्, मा. ॥ध्रुवपद॥
नूतन मुदित दयित मंजुकाये,
चंद विशद वसनानि धरन्तम्. मा. ॥१॥
केसर तिलक ललित निजभाले,
कुंकुम चंद्रकधरमभिरामं. मा. ॥२॥
विन्दुपरिष्कृत शुभ श्रुति युग्मे,
रत्न सुशोभित कुण्डलधारं. मा. ॥३॥
अंबकम धुव लसितलपनावजे,
कुन्द मुकुल सम हासं दधानं. मा. ॥४॥
रेखाविराजित वर कम्बु कण्ठे,
पुरुविधपुष्पकनकमणिहार. मा. ॥५॥
विषधर विग्रहकल्प कर द्वये,
पुष्परचित वलयांग दधारं. मा. ॥६॥
हरमदहर तनु मंजुल कट्याम्,
नंगरचित व्चामीकर रसनाढ्यम्. मा. ॥७॥
करिकर कदलिकरभ समसक्थिम्,
सुषमसुवृत्त मुकुट रुपजानुम्. मा. ॥८॥
नूपुरनादित चरणमुदारम्,
निष्कामानंद खिलतापहारम्. मा. ॥९॥

मानस चिन्तय चारु चरित्रं प्रेमवती वृष पुत्रं पवित्र, मानस ॥ ध्रुवपद ॥

मानस - हे मनुष्यं जीव मात्र को उद्देश्य करके, हेम - चिन्तय, चिन्तकर, स्मरणकर, तुम्हारा सच्चाहित कहाँ है । चारु - श्रेष्ठ अति उत्तम मोक्षरुप हित करने वाले, अतिप्रिय हो जिसका चरित्र - आचरण, विचरण, चरित्र, लीला । प्रेमवती - माता देवी, जिसके हृदय में नित्य सभीजीव के लिये प्रेम भरा हुआ है । वृष - धर्म, जो सदा शास्त्र आशा के अनुसार जीवन जीने वाले है । एसे धर्म देव हरिप्रसाद विप्र ।

पत्र - संतान, स्वरुप में जन्म धारण किये हुये, पु नामक नरक में से जो तारे उसे पुत्र कहा जाता है । ऐसे श्रीहरि घनश्याम महाराज । पवित्र - सद पवित्र, स्मरण करने से पदार्थमात्र पवित्र करे ऐसे मन, कर्म, वचन से सदा सत्य का पालन करने से जिसका अन्तःकरण शुद्ध सत्वगुण वाला हो गया हैं । ध्रुवपद - अचल स्थान, प्रत्येक कडी, पद, पंक्ति तथा स्लोक के अंत में बार-बार वही का वही आवर्तन करना, उसे ध्रुवपद कहते हैं ।

हेमन चिंतन करने लायक ऐसे परमात्मा के अति उत्तम श्रेष्ठतम चरित्र है । जिसके स्मरण मात्र से चिद् अचित् जड चेतन पदार्थमात्र पवित्र हो जाता है । ऐसे भक्ति माता तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप में मन लगाकर ध्यान चिन्तन कर ।

नूतन मुदित दयित मंजुकाये,
चंद विशद वसनानि धरन्तम्. मा. ॥१॥

नूतन - नवीन, नये बादन के समान, प्रातः - उदित सूर्य के समान, अन्यत्र कही न मिले ऐसे . अषाढ मास के मेघ के समान । उदित - प्रातः काल उदित सूर्य के समान वर्षात के समय घने बादल के समान । दयित - दयावाला, करुणाद्र हॉदय होने से अतिदयालुता के कारण । मंजु - सुडोल, सुकोमल, मंजुल, देखने वाले के मन में आनंद कराने वाले । कायं - शरीर, अंगो के ऊपर चंद्र - शरदकालीन पूर्ण चन्द्रमा के समान उज्जवल - सफेद । विशद - विशाल, - वसनानि - वस्त्रो, धोती, उत्तरीयवस्त्र, पगडी इत्यादि कपडे - धरन्तं - परिधान किये हुये है, स्वीकार किये हुये है, ऐसे ।

आषाढ मास के नये नये प्रातःकाल में उदित सूर्य के साथ ताजा मेघ के समान अति सुकोमोल शरीर के उपर चंद्र के समान श्वेत-उज्जवल वस्त्रो को धारण किये हुये । ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥१॥

केसर तिलक ललित निजभाले,
कुंकुम चंद्रकधरमभिरामं. मा. ॥२॥

केसर - केसर युक्त चन्दन से, रंगीन - तिलक - तिलक- उर्ध्वपुंड्र तिलक, ललित - लावण्य मय, अति सुन्दर, निज - स्वयं के भाल में, कपाल के मध्य मे, भाल में, कुकुं का लाल - चन्द्रक - चंदन धरं - धारण किये हुये, अभिराम - अतिशोभायमान, रमणीय, आनंददायक ।

अपने लावण्यमय अति सुंदर ललाट, भाल के ऊपर केसरयुक्त चंदन से मनोहर उर्ध्वपुण्ड्र तिलक धारण करके मध्य में अति शोभायमान कुमकुम का चंदन भी धारण किये हुए । ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र

श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥२॥

विन्दुपरिष्कृत शुभ श्रुति युग्मे,
रत्न सुशोभित कुण्डलधारं. मा. ॥३॥

बिन्दु - तिल, निशान, चिन्ह, परिष्कृत - सुशोभित , श्रृंगार किये हुए, शुभ - सुखदायक , श्रुति - रत्नो से, हीरा से, सुशोभित - शोभायमान, सुशोभित - कुंडल - कान के आभूषण - धारं - धारण किये हुये पहने हुए।

श्रीहहरि के दोनो कानो के ऊपर तिल सुशोभित हो रहा है। उसके ऊपर सोना-हीरा से जडा हुआ सुंदर कुंडल धारण किये हुए। ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥३॥

अंबकम धुव लसितलपनावजे,
कुन्द मुकुल सम हासं दधानं. मा. ॥४॥

अंबक - दोनो आंखो, नेत्रो, मधुपल - भ्रमर के जैसी मधुरता का सागर, मानो जैसे मधुका छत्ता लगा हो। शीलत - शांतिदायक, बरफ के समान ठन्डा। पनाब्जे - पनाह, गउठा, समुद्र की तरह विशाल, कुंद - कुंदन - सुवर्ण, सोना की तरह मुकुल - चांदनी, पोहन के फूल सम - समान, जैसा, हासं - हास्य, प्रसन्नता व्यक्त करते हुये दधानं - धारण किये हुए है।

श्रीहरि के नेत्रो की मधुरता तथा शीतलता ऐसी है कि समुद्र के समान गहरी है। आंख तो मानो भ्रमर के जैसी काली तथा शीतल है । मुखाकृति मानो पूर्णिमा के पूर्ण खिले हुये चन्द्र के समान है। ऐसे सुंदर मुख से हास्य जब निकलता है ले सुवर्ण के समान पोईन के फूल जैसा खिल उठता। ऐसे सुंदर हास्य को धारण किये हुए । ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥४॥

रेखाविसजित वर कम्बु कण्ठे,
पुरुविधपुष्पकनकमणिहारम्. मा. ॥५॥

रेखा - त्रिबली रेखा, विराजित - सुशोभायमान हुइ है, वरश्रेष्ठ - श्रेष्ठ, अति सुंदर, कम्बु - शंख के समान, घडा के जैसे गलेवाले कंठे -गले के ऊपर, कंठ के उपर, पुरु - हृदय के ऊपर, विधा - अनेकों प्रकार से, जात जात के, पुष्प - फूल तथा कनक - सुण का, मणि - मनका, हार-माला धारण किये हुए।

त्रिबली की रेखायें, सुंदर शंख के समान आकृति वाले कंठ के ऊपर खूब शोभित हो रहा है। ऐसे सुंदर कंठ के ऊपर विविधप्रकार की रंगबिरंगी पुष्प की माला, सुवर्ण की मणी तथा हीरा से सुशोभित हार को धारण किये हुये हैं। ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥५॥

विषधार विग्रहकल्प कर द्वये,
पुष्परचित वलयांग दधारं. मा. ॥६॥

विषधर - जहरी कालेनाग, शेषनाग, विग्रह - शरीर, कल्प - कल्पना करो इतना लंबा, कर - दोनो हाथ, द्वये - दोनो, पुष्प - फूल, रचित - बनाया हुआ, वलय - वर्तुल गजरा, बाजूबंध, अंग - अंगो के ऊपर, हाथो के ऊपर दधारं - धारण किये हुए, पहने हुये है।

श्रीहरि के अभयदान करने वाले करकमल इतने लंबे है कि जैसे कल्पना करो कि शेषनाग की शरीर जितने लंबे स्याम वर्ण की शरीर है। दोनो समर्थ हाथ में पुष्प के गजरा तथा बाजूबंधधारण किये हुये । ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥६॥

हरमदहर तनु मंजुल काये,
नंगरचित व्चामीकर रसनाढ्यम्. मा. ॥७॥

हरि - मदमस्तसिंह, राजा, वानर, स्वयं भगवान, मद-अभिमान, अहंकार, हर - नाश करने वाले, तनु शरीर, मंजुल - शोभायमान, सुशोभित, कट्याम् - कमर-कटिभाग । नग - हीरा, मणी, रवचित - जड़ा हुआ, चामीकर - कटी मेखला, रसनाढ्यम् - सुवर्णमय।

मदमस्त हो कर चलने वाले सिंह को अपनी शरीर तथा कमर की शोभा पर अतिगर्व होता है, उसका विनाश करने वाले अत्यंत शोभायमान सुंदर जिसकी कमर है, ऐसी अति कीमती मणी तथा हीरा जडित सुवर्ण की करधन धारण किये हुए। ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥७॥

करिकर कदलिकरभ समसक्थिम्,
सुषमसुवृत्त मुकुट रुपजानुम्. मा. ॥८॥

करिकर - हाथी के सुंड, कदली - केला का स्तंभ, करभ - गर्भ - अन्दर का भाग, सम- समान, सक्थि - एक समान गोल, वर्तुलाकार, मुकुर - वेला के पुष्प जैसा मुक्तिदायक रुप - आकृति, जानु।

दोनो जंधा इतना मजबूत है कि मानो हाथी की सूंड हो तता कोमल तो इस तरह की जैसे केला के गर्भ में जिस तरह कोमलता होती है। जांधतो मानो खीले हुये वेला के पुष्प की तरह गोल मुक्ति देने वाले है। ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥८॥

नूपुरनादित चरणमुदारम्,
निष्कामानंद खिलतापहारम्. मा. ॥९॥

नूपुर - नूपुट, नादित - आवाज वाला, नाद करने वाला, चरण - पग, उदार - उदारमूर्ति, दयावाला, निष्कामानन्द - निष्कामानंद नामावालावर्णी के, निष्कामी भक्तो के निखिल - सम्पूर्ण, सभी प्रकार के, ताप-दुःख, कष्ट, हारं- दूर करने वाले, हरने वाले, नाश करने वाले।

उदारता की मूर्ति ऐसे श्रीहरि के चरणों में धारण किये हुये नूपूर की आवाज जो भी सुनता है उसके तीनो ताप नष्ट हो जाते हैं । निष्काम कामना रहित सभी भक्तों के या निष्कामानंद स्वामी के सभी प्रकार के कष्ट, ताप को दूर करने वाले । ऐसे प्रेमवती माता-भक्ति देवी तथा धर्मदेव के पुत्र श्रीहरि के चरित्र तथा स्वरुप का मन लगाकर ध्यान-चिन्तन कर ॥९॥

इस तरह जो भगवान स्वामिनारयण का ध्यान करेगा उसके सभी प्रकार के कष्ट, दुःख, ताप नष्ट हो जाता है।

श्री स्वामिनारायण मासिक के सदस्यो को विशेष संदेश

अपना श्री स्वामिनारायण मासिक प्रतिमास की ११ तारीख को नियमित बड़ी जिम्मेदारी पूर्वक सोर्टिंग करके पोस्ट किया जाता है । पोस्ट में स्वयं खडे रहकर सभी विस्तार के पिनकोड के अनुसार पैक किया बंडल रखा जाता है। फिर भी किसी को अंक न मिले या अन्यत्र चला जाय तो ता. २० के बाद मो. नं. ९०९९०९८९६९ पर प्रातः १०-०० बजे से सायंकाल ५-०० बजे तक फोन किया जा सकता है। अपना ग्राहक नंबर विशेष रुप से लिखे। ग्राहक नंबर के विना सिकाय स्वीकार्य नहीं है। स्टोक में होगा तो पुनः पोस्ट से भेजा जायेगा। वारंवार अंक अनियमित या मिलती ही न हो तो अपने स्थानिक पोस्ट में लिखित सिकायत करें।

दीपोत्सव कार्यक्रम

आश्विन कृष्ण-८ मंगलवार ता. २३-१०-१६ को पुष्य नक्षत्र होने से हिसाब लिखने के रजिस्टर खरीदने का मुहूर्त अच्छा है।

धनतरेस : आश्विन कृष्ण-१२ गुरुवार ता. २७-१०-२०१६ महालक्ष्मी पूजन दोपहर में १०-५७ से दोपहर ३-१३ तक सायंकाल ४-३७ से ७-५१ तक।

काली चौदश : आश्विन कृष्ण-१४ शनिवार ता. २९-१०-२०१६ हनुमानजी महाराज का पूजन सायंकाल ६-४५ बजे।

दीपावली : आश्विन कृष्ण-३० रविवार ता. ३०-१०-२०१६ समूह शारदापूजन-चोपडा पूजन सायंकाल ६-१५ बजे अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों विधिवत संपन्न किया जायेगा।

नूतन वर्ष सं. २०७३ : कार्तिक शुक्ल-१ सोमवार ता. ३१-१०-२०१६, गोवर्धन पूजा

मंगला आरती प्रातः ५-०० बजे।
शृंगार आरती प्रातः ६-३० बजे।
अन्नकूट रचना (दर्शन बंद) प्रातः ९-१५ से १२-०० बजे तक।
राजभोग आरती प्रातः १२-०० बजे।
अन्नकूट दर्शन दोपहर १२-०० बजे से ३-३० बजे तक।

श्रीहरि के ६ठ्ठे, ७ वें तथा ८ वें वंशज के हाथों से संपन्न होगा। नूतन वर्ष को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री कालुपुर मंदिर में अपनी आफिस में सभी को दर्शन देंगे।

सूचना : समूह शारदा पूजन में लाभ लेने वाले भक्त अपनी बही लाल कलर में कपड़े में पता-फोन-मोबाईल नंबर लिखकर मंदिर की आफिस में ४००/- रुपये भरकर रसीद प्राप्त करलें।

(श्री कमलेशभाई गोर)

कृतघ्नी

- जयंतीलाल के. सोनी (मेमनगर-अमदावाद)

कृतघ्नी का मतलब, जो किये हुये कृत्य के विषय को जानकर भूल जाय उसे कृतघ्नी कहते हैं । जीवन में जिसने एक कांटा निकाला हो, जिसके बदौलत दो अक्षरका ज्ञान हुआ हो उन्हें कभी भूलना नहीं चाहिये । जो उसे भूल जाय तो कृतघ्नी कहा जायेगा ।

श्रीजी महाराजने गढडा के प्रथम प्रकरण के १० वें वचनामृत में जैसा कहा है उसके अनुसार वन विचरण के समय जो अनुभव हुआ उसे लिखे है । स्वयं वैकटाद्रि से सेतुबंधरामेश्वर जा रहे थे, वहाँ पर एक सेवकराम नामका साधु जो श्रीमद् भागवत पढा था, वह बिमार हो गया, उसके पास एक हजार सोना मोहर थी । लेकिन सेवा करने वाला कोई नहीं था । इसलिये वह रोने लगा । उसके ऊपर दया करके महाराजने दो महीने तक सेवा की । वह साधु महाराज से सिद्धा सामान मंगाकर भोजन बनवाता और स्वयं खा लेता लेकिन महाराज को पूछता नहीं था । महाराज स्वयं गाँव में जाकर अपनी भिक्षा करके जो लाते वही खाते । जब अन्न नहीं मिलता तब उपवास करते । सेवकराम पूर्ण स्वस्थ होग या, एक सेर घी खा के पचाजाय इतना स्वस्थ कर दिये । इसके अलांवा मार्ग में महाराज से एकमन जितना भार ढोवाता था और स्वंय रिक्त हाथ चलता था । साधु समझ कर महाराजने सेवाकी लेकिन साधु होकर भी महाराज को एक अन्न नहीं दिया । इसके बाद महाराज उसे कृतघ्नी समझकर परित्याग कर दिया । इस तरह जो किये हुये कृत्य को न समझे उसे कृतघ्नीी कहते है । इसके अलावां कोई मनुष्य पाप किया हो वह शास्त्र के अनुसार प्रायश्चित कियां हो फिर भी जो उसे पापी कहे तो कृतघ्नी कहा जायेगा । ऐसी वात अपने प.पू. बड़े महाराजश्रीने एक बार कालुपुर मंदिर के सभा मंडप में कही थी कि श्रीजी महाराज ने अपने आश्रितों के आत्यंतिक कल्याण के लिये छोटी उम्र में (११ वर्ष की उम्र में) सात-सात वर्ष तक वन विचरण करके अथकश्रम किया । उस श्रम का भार कब उतरा कहा जायेगा कि जब श्रीजी महाराज की आज्ञा का पालन करके भजन-भक्ति करें तो । अन्यथा महाराज का किया गया पुरुषार्थ व्यर्थ कहा जायेगा । जिसे कृतघ्नी होने का पाप लगेगा । ऐसे कृतघ्नी का महाराज कभी कल्याण नहीं करते । कारण यह कि वह बड़ा पापी है । शिक्षापत्री में महाराजने २६ वें श्लोक में आज्ञा की है कि जि ससत्य के वचन को बोलने से अपना द्रोह हो तथा अन्य का द्रोह हो तो उसे कभी नहीं बोलना चाहिए । जो कृतघ्नी हो उसका सदा त्याग करना चाहिए । महाराजने सेवा करने का दृष्टांत देकर जीवन का कल्याण कहीं बिगड तो नही रहा है इसका सदा ख्याल रखने की वात कही है ।इसका सतत चिंतन करते रहना चाहिए । अब इससे ख्याल आयेगाकि कृतघ्नी की व्याख्या में कौन आया है । सभी जीवन गर्भकाल में गर्भ की यातना भोगते हैं, उस समय परमात्मा की प्रार्थना करते हैं कि हमें आप बाहर करो तो हम आप की भजन-भक्ति करेंगे लेकिन ऐसा होता नही तो वही कृतघ्नीपना की वात कही जायेगी । हम आये भजन भक्ति करने के लिये लेकिन संसार के व्यवहार में लगने से कृतघ्नी कहे जायेंगे । इस लिये परमात्मा के अगणित उपकार हैं उसे कभी भूलना नहीं चाहिए । इसी तरह माता पिता के अगणित उपकार हैं उन्हें भी कभी भूलना नहीं चाहिए । माता-पिता स्वयं दुःख पीडा का सहन करके अपनी संतान का लालन-

पालन करते हैं, बड़ा करते हैं, जब वही संतान बड़ी होती है, सक्षम होती है तब अपने वृद्ध माता पिता की अवहेलना करके दु:खी करते हैं उन्हें एक कोने में छोडकर स्वयं देव-मंदिरों में घूमते है, इसे ही कृतघ्नी कहा जायेगा । इसीलिये महाराजने शिक्षापत्री के १३९ वें श्लोक में आज्ञा-की है कि ''हमारे जो आश्रित गृहस्थ वे माता-पिता गुरु तथा रोगातुर ऐसा जो भी मनुष्य उसकी जीवन पर्यंत अपने सामर्थ के अनुसार सेवा करनी चाहिए । जिन्हे स्वयं का कल्याण चाहिए वे इस आज्ञा का लोप कभी न करें, अन्यथा उन्हें कृतघ्नी समझा जायेगा ।

इसी तरह शिक्षापत्री श्लोक १२८ में ''जो हमारे आश्रित हैं वे सभी सत्संगी अपने धर्म की रक्षा के लिये हमारे द्वारा संस्थापित जो आचार्य हो अयोध्याप्रसादजी तथा रघुवीरप्रसादजी उनसे दीक्षा ग्रहण करें । इसी तरह आनेवाले सभी परंपरा के जो भी आचार्य हैं उनसे दीक्षा लेकर उनके प्रति वफादार रहने से कृतघ्नी पना बना रहेगा । जिस गुरु से मंत्रदीक्षा लिये उसका कभी त्याग नहीं करना चाहिए । जो आश्रय का त्याग करते हैं उन्हें कृतघ्नी कहा जायेगा । परिणाम स्वरुप आत्यंतिक कल्याण से वंचित हो जायेंगे । श्रीजी महाराजने गढडा प्रथम प्रकरण के १ वचनामृत में कहा है कि जो धर्मकुल के आश्रित भक्त हैं जब वे अपनी शरीर का त्याग करके भगवान के धाम में जाते हैं तब कोई गरुण पर बैठकर जाते हैं तो कोई विमान में बैठकर जाते हैं तो कोई रथ में बैठकर जाते हैं । जो धर्मवंशी की आज्ञा में या आश्रय में रहते हों वे ही मात्र इसके अधिकारी हैं । इसी तरह शिक्षापत्री की आज्ञानुसार त्यागीवर्ग को भी महाराजश्री के पास दीक्षा लेना होता है । संत दीक्षा शुभाआशय से लेकर आश्रय प्राप्त करके भगवान की भजन करते हुये श्रेय करना होता है । परंतु सत्संग में भजन-भक्ति के प्रताप से बड़ापन आ जाने से देहाभिमान में वृद्धि है परिणाम स्वरुप संत होने के बाद धर्मवंशी आचार्य का आश्रय त्याग कर अपने स्वतंत्रा विचार के अनुसार सुखी जीवन जीने की व्यवस्था में आश्रय बनाकर महाराज की आज्ञा से विरुद्ध आचर करने लगते हैं । ऐसे लोग कृतघ्नी तथा पापी है । लाखो-करोडो रुपये की संपत्ति बनाकर लोगों को भरमाकर अपनी व्यक्तिगत स्थिति को मजबूत करते हैं । त्यागी की दीक्षा ग्रहण करके आचार्य महाराजश्री के आश्रय में रहकर भजन भक्ति के मार्ग से अक्षरधाम की प्राप्ति का जो भाव था उससे हटकर स्वतंत्र वृत्ति के होने से उहें भी कृतघ्नी कहा जायेगा । यहबात महाराजने शिक्षापत्री में आज्ञा के रुप में कही है यह वात सर्वविदित है । ऐसे कृतघ्नी व्यक्ति का त्वरित त्याग करना चाहिए । यह महाराजकी आज्ञा है । ऐसे कृतघ्नी का कभी कल्याण नहीं होता । इसलिये कृतघ्नी का संग त्याग करना चाहिये, अन्यथा उसका पतन होना निश्चित है ।

थोडा समय जीना है तो अपने आत्यंतिक कल्याण की जगह पर कृतघ्नी का संग क्यों किया जाय । इसलिये कृतघ्नी का त्याग करके महाराज की आज्ञा को शिरोमान्य रखकर जवीन को कृतार्थ करना चाहिए ।

नवम्बर-दिसम्बर-२०१६ अंक संयुक्त प्रकाशित होगा

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी वाचक सदस्यों को बताना है कि आगामी नवम्बर-दिसम्बर-२०१६ श्री स्वामिनारायण मासिक संयुक्त अंक प्रकाशित होगा । इसको मेईल करने का कार्य नवंबर में किया जायेगा । यह सभी के जानकारी के लिये है ।

संप्रदाय का गौरव

अपने संप्रदाय में श्री नरनारायणदेव के अनन्य निष्ठावाले तथा धर्मकुल के कृपापात्र प.भ. श्री जेठालाल सवाणी (कच्छ:केरा के रहने वाले वर्तमान में लंडन) जिन्होंने अपने संप्रदाय के तथा विशिष्ट द्वैत मत के ऊपर अपने संप्रदाय के शास्त्रों का सार लेकर बनारस हिनदु युनिवर्सिटी में से महानिबंधतैयार करके पी.एच.डी. की डिग्री प्राप्त किये है, जो संप्रदाय के लिये गौरव का विषय है । जिन्होंने श्री नरनारायणदेव देश के अनेक प्रसिद्ध ग्रंथो का अंग्रेजी अनुवाद करके बहुत बड़ी सेवा की है । जिसके इस गौरवास्पद के लिये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री उनकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिये आशीर्वाद दिये हैं ।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

वर्तमान में उरी स्थान पर भारतीय सैनिको पर पाकिस्तान प्रेरित आतंकवादियों ने आक्रमण किया जिससे १८ भारतीय जवान शहीद हो गये।। पूरे देश को इसका बहुत बड़ा आघत लगा परिणाम स्वरुप सभी भारतीयो के मन में एक ही वात थी कि हमें भी बदला लेना है। उनके प्रत्युतर में अपने भारतीय सैनिक पाकिस्तान में जाकर आतंकवादियों को मार आये। यह एक मिशन था जो सैन्य के बहादुरी का एक परिचायक था। ऐसे मिशन सभी के जीवन में आता रहता है अथवा संयोग बन जाता है।

प.पू. बड़े महाराजश्री ने म्युजियम बनाया और उसमें श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का सभी को दर्शन हो तथा सभी लोग इन अमूल्य सात्विक तत्वों से पूर्ण तथा आध्यात्मिक भाव से परिपूर्ण प्रसादी की वस्तुओं का ज्ञान हो सके, इससे सभीके मन में सुख-शांति मिले और महाराज के दर्शन का अनुभव हो इसका ध्यान रख कर श्रीजी महाराज की कृपा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से पूर्ण हआ है। ऐसा अद्वितीय म्युजियम अपने संप्रदाय से पूर्ण हुआ है। ऐसा अद्वितीय म्युजियम अपने संप्रदाय का स्क्रिन शोट है। संप्रदाय के आकाश में प्रतिदिन निकलने वाली पूनम अर्थात् अपना म्युजियम।

म्युजियम अब म्युजियम में से मंदिर बन रहा है। कारण यह कि मंदिर की तरह यहाँ पर लोग अब बार-बार आते रहते हैं। आये विना रह नही सकते। घर जाने के बाद किसी को चरणारविंद की छाप देते हुये श्रीजी महाराज दिखाई देते है। किसी को जेतलपुर के यज्ञ के श्लोक सुनाई देते हैं। तो किसी को कला भगत की तरह लोहे के गेंद पकड़ने की वेदना के अनुभव के बाद उसमें से सुखपूर्वक निकल जाने का अनुभव होता है। तो किसी को श्रीजी महाराज द्वारा बजाईगई बांसुरी की ध्वनि सुनाई देती है। ये सभी घटनाये उन्हें याद आती है जिससे वे विना आये रहते नहीं है।

वर्तमान में म्युजियम के होल नं. १ में अमदावाद मंदिर का तीन मूल दरवाजा रखा गया है जिसमें से एक जो श्री राधाकृष्ण देव का दरवाजा है उसके रखरखाव का प्रिजर्वेशन का कार्य चल रहा है, जिसकी सेवा एक हरिभक्त कर रहे हैं।

– प्रफुल खरसाणी

केवल वोडाफोनवालों के लिये

प.पू. बड़े महाराजश्री के स्ववचनवाली कोलरट्युन मोबाईळ में डाउन लोड करने के लिये अधोनिर्दिष्ट करें।

मोबाईल में टाईप करें : **cf 270930** टाईप करें **56789**

नम्बर पर : **S.M.S.** करने से कोलरट्युन प्रारंभ होगा। नोंट : **cf** टाईप करने के बाद एक स्पेस छोड़कर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि सितम्बर-२०१६

रु.१,६९,६१०/- अ.नि. विद्याकुमारी पाण्डे (बचीबहन-धर्मकुल) कृते प.पू. बड़ महाराजश्री श्री स्वामिनारायणमंदिर (हवेली) कालुपुर

रु.५१,०००/- अ.नि. नंदलालभाई भाईचंदभाई कोठारी (भालजा साहब मंडल) अमदावाद । कृते जसवंतभाई अमुलखभाई दोषी

रु.५१,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर स्वीडन के २५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर, कृते नरोतमभाई।

रु.३०,०००/- अ.नि. व्योमेशभाई इन्द्रवदनभाई शाह, नारणपुरा।

रु.२५,०००/- नरोतमभाई पटेल - कच्छ।

रु.२१,०००/- अ.नि. मणीलाल लक्ष्मीदास भालजा साहब मंडल अमदावाद । प्रे. नंदलालभाई कोठारी, कृते हरीशभाई अमरशीभाई गोहिल।

रु.२१,०००/- एच. आर. शाह अमदावाद।

रु.११,०००/- वसंतभाई तथा देविकाबहन त्रिवेदी - शिकागो

रु.११,०००/- अ.नि. दीवालबहन सवजीभाई चौहाण (धुलकोट) सूरत कृते सवजीभाई तलशीभाई चौहाण।

रु.११,०००/- धीरजभाई के. पटेल - सायन्स सीटी।

रु.६,७००/- प.भ. विभाकर एस. पंड्या (भालजा साहब मंडल) अमदावाद जन्म दिन के निमित्त।

रु.५,१२१/- अ.नि. मणिलाल लक्ष्मीदास भालजा एडवोकेट - साहब के जन्म दिन पर (भा.व.१०) आत्मीय हरिभक्तों की तरफ से - कृते प्रबोधभाई झाला।

रु.५,००१/- एक हरिभक्त नारणपुरा।

रु.५,००१/- अ.नि. रमाबहन गोकलदास गांजावाला के स्मरणार्थ अमदावाद।

रु.५,०००/- लाभुभाई शिवलालभाई पटेल - कल्याणपुरा

रु.५,०००/- निर्मलबहन हरिकृष्णभाई पटेल - सापावाडा।

रु.५,०००/- डाह्याभाई आर. प्रजापती - बोपल । अ.नि. भालजा साहब के जन्म दिन के निमित्ते।

रु.५,०००/- जशवंतलाल अमुलखभाई दोशी - कालुपुर

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (सितम्बर-२०१६)

ता. ०१-०९-२०१६ शा.स्वा. हरिकेशवदासजी गांधीनगर की प्रेरणा से कौशिकभाई भावसार सरकारी नौकरी से निवृत्त हुये उसके निमित्ते - चांदलोडिया।

ता. ०५-०९-२०१६ श्री गणेश चतुर्थी के निमित्त प्रसादी के गणपति का समूह महापूजन मुख्य यजमान नरेशभाई ईश्वरभाई पटेल, नारणपुरा।

ता. ११-०९-२०१६ रमेशचंद्र मणीलाल भावसार - सेटेलाईट।

ता. १९-०९-२०१६ (प्रातः) सिद्धार्थ युवराज मोदी - अमदावाद।
(११ बजे) पटेल बेचरभाईकरशनभाई लालोडा। प्रे. विश्वप्रकाश स्वामी

ता. २९-१०-२०१६ शनिवार श्री हनुमानजी का पूजन

श्रीजी महाराज की आज्ञानुसार आश्विन कृष्ण चतुर्दशी को श्री हनुमानजी का पूजन करना चाहिये उसके अनुसार, श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्रीजी महाराज के करकमलों से जिनकी पूजा हुई है ऐसे श्री हनुमानजी का पूजन ता. २९-१०-२०१६ को शनिवार सायंकाल ४-०० से ६-०० बजे तक रखा गया है। पूजा में दम्पती अथवा दो व्यक्ति का रु। ११००/- भरकर पूजा में बैठने वालों को भोजन का प्रसाद लेने की व्यवस्था की गई है।

विशेष जानकारी के लिये संपर्क - म्युजियम : ०७९-२७४८९५९७ तथा दासभाई मो. : ९९२५०४२६८६

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग आख्यायिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

श्रीहरि की कृपा से जयजयकार

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

श्रीजी महाराज जेतलपुर के महल में विराजमान थे । महल कीसी राजा का महल नहीं । जेतलपुर की यात्राक रने जांय तो देवसरोवर के किनारे जो मकान है उसे संत लोग ब्रह्ममहल नाम रखे हैं । महाराज जब भी जेतलपुर पधारते तब इसी महल में रुकते थे । आनंद स्वामी इसी महल में महाराज से मिलने आये और कहे कि हे प्रभु बड़ा गजब हो गया, घी कम पड गया है । यहाँ पर सभी ब्राह्मण लोग घी की मांग कर रहे है । वह आवाज यहाँ तक सुनाई दे रही है । उस समय आनंद स्वामी काफी व्यग्र थे । लेकिन महाराज व्यग्र नहीं थे । महाराज सामने देखकर हसने लगे । किसी भी स्थिति में भगवान के मुख पर मंदहास्य ही रहता है । मनुष्य के मुख पर नाना प्रकार का हावभाव दिखाई देता है । पसीने से लथपथ दिखाई देता है जैसे बरसात हो रहा हो । कभी कंपन दिखाई देता है तो समझना की बरसात जैसी स्थिति है । मनुष्य के मुख से ही तीनो ऋतु का भाव दिखाई देता है । परमात्मा के मुख पर देखे तो ''मंदहास रुचिरा ननाम्बुजम्'' की स्थिति थी । कारण यह कि सारे जगत की चिन्ता प्रभु को स्पर्श तक नहीं कर सकती । राग द्वेष - ईर्ष्या से प्रभु रहित हैं । ईश्वर की लीला बड़ी अलौकिक है । संसार में आते हैं । लेकिन उनमें स्वयं की दीव्यता दिखाई देती है ।

आनंद स्वामीने कहा कि ''महाराज ! यज्ञ में घी आनेवाला था लेकिन आया नहीं । इधर ब्राह्मण लोग घी दो घी दो की आवाज कर रहे हैं । महाराज मंदहास करते हुये वात सुन रहे थे । स्वामी आप चिंता मत कीजिये । महाराज अभी तूफान हो जायेगा । ये लोग काबू में नहीं होंगे । महाराज ने कहा, स्वामी ! आप चलिये हम आ रहे हैं । महाराज के मस्तक पर पगड़ी दाहिने हाथमें सोटी, बांया हाथ कमर पर रखे जैसे हाथी चल रहा हो उस चाल से चले । भंडार में पहुंच गये । वहाँ सेवा करने वाले पार्षदों से कहने लगे कि यह क्या है ? महाराज ! ये लोग घी मांग रहे है, घी है ही नहीं । आज की तरह पहले घी के डब्बे नहीं थे । चमडे में घी आता था । इससे घी बिगडता नहीं था । प्रत्येक यज्ञ कार्य में या भोजन में इस घी का उपयोग किया जाता था । श्रीजी महाराज अपनी सोटी को आगे किये और कहे कि घी के इतने पात्र तो है ? महाराज ! ये सभी पात्र खाली हो गये हैं । देखिये एकपात्र में घी देखाई दे रहा है । एक भक्तने कहा कि महारा ज! इतना घी तो आंख में आंजन लगाने भर को भी नहीं होगा । हजारो ब्राह्मण आधामन घी किस काम का । शाग का वघार भी नहीं होगा । इतना घी तो बहुत है । लाओ इसे ऊपर करो और नीचे कोई बड़ा पात्र रखो । वैसा ही किया गया । अब जितनी जरुरत थी उतनी उसके नीचे जो भी पात्र रखा जाता वह पात्र घी से भरजाता लेजाओ - लेजाओ - खूब खिलाओ । अपने आप सभी की आवाज बंद हो गई । बाईस हजार जितने ब्राह्मणो का घी पूरा हो गया ।

मित्रों ! यदि सच्चे अर्थ में भगवान स्वामिनारायण की शरण स्वीकार करेंगे तो पानी की क्या बात घी को भी नदी बहेगी । भगवान श्री स्वामिनारायणने जेतलपुर के यज्ञ में घी की नदी बहा दी । वह धारा आज भी चालू है । आज भी संप्रदाय में घी की कमी नहीं रहती । भगवान स्वामिनारायण की आज्ञानुसार जो भी व्यक्ति जीवन जीयेगा उसके घर में घी की कमी कभी नहीं होगी । यह सब भगवान स्वामिनारायण का प्रताप है । भगवान के प्रताप से भक्तों के घर में तथा भक्तों के मन में सदा सुख तथा आनंद भरा हुआ है ।

•

भगवान सभी का अच्छा करें

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मानव मात्र का यह स्वभाव है कि जब उसे कही सफलता मिलती है तब कहता है कि मैने किया जब असफलता मिलती है तब कहता है कि भगवानने किया या भाग् यमें नहीं था ।

एक समय की बात है - अपने इष्टदेव भगवान स्वामिनारायण संत, हरिभक्त, काठि दरबारो के साथ कही जा रहे थे । खेत में गेहू रोपा गया था । किसान खेत की खेतवाई कर रहा था । महाराज की नजर किसान पर पडी ।

पेईज नं. १९

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "इस शरीर को मूल्यवान बनाना है"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम क्या करने आये है ? हम इस संसार में मोक्ष प्राप्त करने के लिये आये है। इसी लिये तो हम सभी यहाँ बैठे है ? हम लोगो की जो आंखे है वे बाहर के नेत्र है। सत्संग तथा विवेक अपने भीतर के नेत्र है। जिनके पास ऐसे नेत्र नहीं है उन्हें हम अन्धा ही समझते हैं। इलिये कि जिसके अंदर विवेक नहीं है तथा सत्संग का योग भी नहीं है ऐसे लोग कुमार्ग पर तुरंत चढ जाते है। जिस तरह अंधे व्यक्ति को कोई उसका हाथ पकडकर सडक पार कराता है। ऐसे व्यक्ति भी होते है जो अंधे को देखकर मश्करी करते है। हम लोग ऐसे नहीं है। हमे अंधा व्यक्ति रास्ते में मिल जाय तो उसका हाथ पकड़कर पार करना चाहिए। इसी लिये अपने मंदिर हैं। माटी को धूल समझाजाता है। उसकी कोई कीमत नही, परंतु उसी माटी से दीपक बनाया जाय तो उसका मूल्य हो जाता है। पानी भरने का घड़ा बनाया जाय तो और भी कीमत बढ जाती है। इसी तरह उसी माटी से कलाकृति करके बाजार में रखा जाय तो अधिक से अधिक कीमत का हो जाता है। इसीत रह अपने जीवन की कीमत है हम जैसा हमे स्वरुप देंगे वैसी कीमत होगी। महाराज ने जो मंदिर दिये तथा सत्संग दिये उसी से अपने कोमूल्यवान बनाना है। इस शरीर की रक्षा करनी चाहिये। इस शरीर के माध्यम से ही मोक्ष साध्य है। इसे प्राप्त करके भी जो अपना कल्याण नहीं करता, उसके जैसा महामूर्ख कौन हो सकता है। अपनी शरीर की रक्षा करने की मतलब यह कि शरीर को धर्म कार्य में लगाना। शरीर की रक्षा किससे होती है। धर्म से होती है। जब तक शरीर है तब तक शरीर से अच्छा काम करते रहना चाहिए। जिस तरह घडे मे छोटा भी छिद्र हो तो धीरे धीरे पानी निलक जाता है। इसी तरह इस शरीर का है जैसे जैसे समय वीतता जाता है वैसे-वैसे आयु कम होता जाता है। शरीर क्षीण होता जाता है। इसलिये जब तक शरीर अच्छा है तब तक अच्छे काम कर लेना चाहिए। महाराजने कहा भी है कि धर्म का कार्य तुरंत करना चाहिये। अपना मन एकक्षण में बदल जाता है। एक व्यापारी समुद्र में मुसाफिरी कर रहा था। एका एक उसकी नाव डूबने लगी, नाव चालक से कहा कि हमे तूं बचा ले तो हम सम्पूर्ण मिल्कत तुम्हें दे देंगे। नाविक उसे बचा लिया। अब व्यापारी जब किनारे आया तो उसका विचार बदल गया। सभी सम्पत्ति कैसे दे दूं। मेरी पत्नी है उसके लिये आधी सम्पत्ति तो रखना ही पडेगा। आधी भी दे दूं दो मेरे बच्चों का क्या होगा। मेरे मा-बाप है उनेक लिये भी तो विचार करना पेडगा। फिर विचार आया कि माछीमार तो पाप कर्म करता है। अब उसने मुझे बचाया है तो उसे पुण्य मिलेगा, ऐसा तो पुण्य कभी करने वाला नहीं है। इस माछीमार को हमारा आभार मानना चाहिये। बाद में २-३ रुपेय देकर सबकुछ उसी में आगया उतरते समय ऐसा कहा . कहने का मतलब विचारों में परिवर्तन होता रहता है। इसलिये परमात्मा हमें जो दिये हैं उसका तत्काल उपयोग करलेना चाहिए। सभीको शांति चाहिए। सब चारते हैं कि पूरी जिंदगी हम शांति में बिताये, ऐसी ईश्वर से प्रार्थना भी किये। मृत्यु के समय भी ऐसा सोचता हैं कि मृत्यु भी शांति से निकले। यह तो सभी के भाग्य में नहीं हो ता। हजारो वर्ष तप करने के बाद भी कुछ बाकी रहजाता हैं तो उसे जन्म लेना पड़ता है। जीव अनंतबार जन्म लेता है और मरता है। इसका अंत नही आता। प्रत्येक व्यक्ति को अपने प्रारब्धके अनुसार शरीर तथा आयु मिलती है। मनुष्य नित्य लोभ लालच अहंकार में डूबा रहता है ।खराब कर्म करता रहता है। जब अपने कर्म का ख्याल आजाया तो प्रायश्चित करके आगे का विचार करना चाहिये। अपना कल्याण अपने हाथ में है। किसी से मांगनेकी जरुरत नहीं है। जरुरत इतनी है कि जो महाराज की आज्ञा है उसी में रहना वैसा ही वर्तन करना। अपना लक्ष्य निश्चित है कहाँ जाना है ? इसका ध्यान रखकर पुरुषार्थ करना चाहिए कि कोई विघ्न तो नहीं आ रहा है। कोई ऐसा नहीं करना चाहिए जो मोक्षमार्ग में बाधा बने। अपने पास कितना समय है वह सभी को जानकारी है। कब खेला खत्म हो जायेगा इसकी जानकारी किसी को नहीं है। जो भी कार्य करना है वह समझबूझ कर करना है। सतत नियम में रहकर शरीर के माध्यम से कोई अनिच्छनीय कार्य न हो जाय इसका सब ध्यान ध्यान रखना चाहिए। इस शरीर के माध्यम से अपना जीवन आदर्श बनता है। जिससे सामने वाले व्यक्ति के

जीवन में परिवर्तन हो जाय।

●

प्रार्थना का महत्व

– सां.यो. कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

आधुनिक जीवन इतना व्यस्त हो गया है कि शांति लोगों से कोसो दूर हो गई है। शांति प्राप्ति का सहज उपाय है। प्रार्थना। प्रार्थना का मतलब दीनबन्धु के सामने दीन हीन बनकर अपने हृदय की वेदना कहना। प्रार्थना का मतलब दु:ख मुक्ति के लिये आर्तनाद। भगवान की सहायता के लिये पुकारना। इसके अलांवा विरहातुर होकर हृदय में दर्शन के लिये प्रभु की प्रार्थना करना चाहिए। प्रार्थना हृदय का स्थान है। प्रार्थना के पवित्र झरने से अपने भीतर की अपवित्र, मलिन वासना दूर हो जाती है। प्रार्थना अपवित्र विचारो को दूर करने का श्रेष्ठ विकल्प है। प्रार्थना से अपना विचार निर्मल बनता है। जिससे मानव नम्र बनकर उन्नतिके मार्ग चलता है। प्रार्थना द्वारा हम ईश्वरीय शक्ति को नमन करेत हैं। प्रार्थना ईश्वर के प्रति आभार मानने का साधन है। स्थूल औषधिजैसे अपने देश के रोग को दूर करती है, उसी तरह भजन भक्ति आत्मरोग को दूर करती है। अपनी शरीर क्षणभंगुर है। एक दिन तो सभी को जाना ही होता है। देह का अन्तिम सत्य तो यही है कि वह एक दिन अग्नि में भष्मशात् होती है। प्रार्थना से प्रभु की प्रसन्नता मिलती है, जिसमे इह लोक तथा परलोक दोनो सुधर जाते है। अपने शरीर में रोग होता है तो दवा खाने से वह रोग दूर हो जाता है, लेकिन रोग को दूर करना हो तो अपने इष्टदेव की प्रार्थना करनी चाहिए। प्रार्थना मोबाईल फोन है। नरसिंह मेहता की हुंडी महाराजने उनकी भजन मोबाईल का कोल समझा. लोग मजाक करने के लिये यात्रियों को उनके घर प्रेषित किये। महेताजी उन लोगो को हुंडी भी लिखकर दिये। "मारी हुंडी स्वीकारो महाराज रे शामला गिरधारी"। भगवान ने कीर्तन रुपी मोबाईल के कोल को सुनलिया और शेठ रुपी भगवानने यात्रालुओं को रुपये गिन कर दे दिये। जब अपने ऊपर आपत्ति – संकट आता है तब अपने आत्मीयजन अपना साथ छोड देते हैं लेकिन चाहे कितना भी बड़ा संकट हो भगवान की प्रार्थना की जाय तो भगवान तत्क्षण आजाते है।

शरीर का आहार अन्न है। इसी तरह आत्मा का आहार प्रार्थना है। दुनिया का प्रत्येक व्यक्ति प्रात: अथवा सायंकाल अपने अपने धर्म स्थल पर जाकर प्रार्थना करते हैं। (१) हिन्दु मंदिर में जाकर प्रार्थना करते है। (२) मुस्लिम – मस्जिद में जाकर बंदगी करते है। (३) ख्रिस्ती – चर्च में जाकर प्रेयर करते हैं। (४) सिख गुरु द्वारा में जाकर मस्तक टिकाते हैं। (५) जैनलोग देरासर में जाकर नवकार मंत्र बोलते हैं। (६) पारसी अगियारी में जाकर अग्नि की पूजा करते हैं। प्रार्थना के स्थल सभी के अलग-अलग, प्रार्थना के प्रकार भी अलग-अलग लेकिन प्रार्थना तो सभी करते हैं।

प्रार्थना में भाव होना चाहिए। शब्दों की जरुरत नहीं। एक विद्यार्थी चर्च में जाकर प्रतिदिन ईशु ख्रिस्त के आगे पूरी ए.बी.सी.डी. बोलकर चला जाता है। एक दिन पादरीने कहा कि ए.बी.सी.डी. क्यो बोलते हों। तब उस विद्यार्थीने कहा कि इसके अलांवा हमें कुछ आता ही नहीं है। हमें गोड कीप्रेयर करना है भगवान की प्रार्थना करनी है। इसलिये ए.बी.सी.डी. बोलकर ऐसा करता हूँ कि "मेरे भाव के अनुसार शब्दों को लगा लीजियेगा। इस तरह प्रार्थना में भाव आवश्यक भगवान के प्रति भाव तथा अपनी दीनता प्रगट करना ही प्रार्थना है। जैसे भागवत में गजेन्द्र मोक्ष की वात आती है. जब गजेन्द्र मगर की पकड़ में आ गया और गजेन्द्र छुडाने का खूब प्रयत्न किया लेकिन छूट नहीं सका तब सूंड में कमल का फूल लेकर भगवान की प्रार्थना करने लगा और भगवान किसी की प्रतीक्षा किये विना तत्क्षण गजेन्द्र के पास आकर उसे मुक्त कर दिये। प्रेमानंद स्वामीने लिखा है कि "गरुड तजीने पाला पधार्या गज सारु महाराज।

महाभारत में द्रोपदी चीर हरण के समय जब द्रोपदी भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य तथा अपने महारथी पतियों के सामने देखी तो सभी अपने मस्तक नीचे कर लिये। उस समय दु:शासन द्रोपदी की चीर खींचने लगा तब द्रोपदी भगवान का आर्तनाद करके जब पुकार की तो "हे कृष्ण लिजिए अब तु मोरी सार" कृष्ण उसी क्षण यहाँ आकर द्रोपदी की रक्षा किये। वांकानेर का जीवराम विप्र की आर्तनाद सुनकर सागर के बीच में जाकर रक्षा किये।

परम भक्त कविराज देहल को द्वेषी रवाजी सत्संग छोडाने के लिये देश निकाला करवा दिया तो आर्तनाद प्रार्थना किये तथा मालिया के ठाकोर गोडजी दरबार द्वारा श्रीहरिने रक्षा की। श्रीजी महाराज ने मुक्तानंद स्वामी को वडोदरा की सभा जीतने के लिये भेंजा। उस समय प्रखर पंडितो को देखकर स्वामी थोडा चिन्तित अवश्य हुये थे लेकिन महाराज की प्रार्थना की तो "हूं तो छुं घणीनगरी दूर तोय तमारी रे तमे गुण सागर गोपाल देव मोरारी रे" महाराज तुरंत दर्शन देकर आस्वाशन दिये। सच्चे मन से भगवान की प्रार्थना की जाय तो भगवान शांति से बैठ सकते हैं क्या ?

सती सावित्री की प्रार्थना से जब सत्यवान को यमराज लेजा रहे थे उस समय उनके हाथ से मुक्त कराई थी । प्रार्थना का जितना गुण गान किया जाय कम है।

आज कल तो प्रार्थना कई लोग करते है, लेकिन उसके पीछे कई कारण होते है। किसी को संपत्ति की चाहना होती है, हे भगवान हमें संपत्ति दीजिये । संतान दीजिये । यदि मेरे मन के अनुकूल सफलता मिल जायेगी तो मैं ऐसा करुंगा ऐसा करुंगा इत्यादि प्रकार से प्रार्थना की जाती है । तो क्या इस प्रकार की प्रार्थना भगवान को अच्छी लगती है ? भगवान के पास कभी कोई मांग नही करनी चाहिए । प्रार्थना करते समय ध्यान रखना चाहिए कि जिस किसी के पास प्रार्थना नहीं करनी चाहिए । श्री स्वामिनारायण भगवान के पास ही करनी चाहिये । पुत्र को जो चाहिये वह अपने मा-बाप के पास मांगे तो दोष नहीं कहा जायेगा । लेकिन यत्र-तत्र मांगता फिरे तो उसे भिखारी कहा जायेगा । भगवान तथा उन्हीं के अपर स्वरुप प.पू.ध.धु. आचार्य महाराज से प्रार्थना करके शक्ति प्राप्त करनी चाहिये ।

''श्रीजी सहु संतो रे मली करजो मारी सहाय,
हुं छुं तमारे शरणे रे पुरुषोत्तम लागु पाय.....''

प्रार्थना का बल देखें तो छोटी काशी उमरेठ में प्रखर पंडितो के बीच सत्संगी कृष्णराम हरिभक्त को ग्रहण न होने के लिये पंडितो के बीच झूठी शर्त लगी । उस समय गोपालानंद स्वामी को प्रार्थना करने से स्वामीने नक्षत्रों की गति को रोक दिया और ग्रहण भी रुक गया । इस तरह कृष्णराम की रक्षा की । श्रीजी महाराजने भी प्रार्थना के लिये कहा है । हे महाराज ! कुसंगी से हमारी रक्षा करना । इसके अलांवा इस तरह प्रार्थना करनी चाहिए कि - हे महाराज ! काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, देहाभिमान तथा अन्तःशत्रुओं से हमारी रक्षा कीजिएगा । नित्य अपने भक्तों का साहचर्य दीजियेगा । इस तरह नित्य प्रार्थना करनी चाहिए

अनु. पेईज नं. १६ से आगे

महाराज ने किसान से पूछा कि पटेल ! गेहू अच्छा हुआ है ? किसानने कहा कि क्यों अच्छा न हो ? इस खेत की अच्छी तैयारी करके खात-पानी डालकर तैयार किया हूँ, इसलिये अच्छा तो होगा न ? इसमें कोई नई बात तो है ही नहीं । जैसा पुरुषार्थ वैसा फल ।

श्रीहरि पटेल का उत्तर सुनकर कुछ बोले नहीं लेकिन मंद हास करते हुये आगे निकल गये । वह पटेल भी महाराज के प्रश्न का उत्तर अच्छा किया हूँ . ऐसा समझकर प्रसन्न होकर खेत की रखवाली कर रहा था . कुछ समय बीतने के बाद महारा जउसी रास्ते से वापस हो रहे थे । प्रभु ने देका कि गेहूँ की पाक तैयार होने से पहले काटकर मेड़ पर रखा जा रहा है। पटेल भी वहीं था । लेकिन मुख काफी उदास था । मुख से भाव स्पष्ट हो रहा था । उन्हें देखकर प्रभु ने पूछा कि पटेल । ऐसा क्यो कर रहे हो ? गेहूँ पहले क्यो काट लिये । किसानने कहा कि प्रभु ! क्या करें ? भगवान ने गेहूँ में गेरु आ रोग पैदा कर दिया जिससे लेढा हो गया अर्थात् दाना पड़ा ही नही । पूरा पाक बिगड गया । पाक तैयार होने की स्थिति में आकर दाने नही बैठे, यह भगवानने सब कुछ किया है । अब क्या करें ? रोग लगने के बाद दाने नही पड़े इसलिये किसी काम का नहीं है। इसी कारण से कटवा दिये । पटेल अपनी वात पुरी कर दी और भगवान विना कुछ कहे आगे बढ गये ।

थोडा दूर जाने के बाद भगवान संतो से कहने लगे । हे संतो जीवो का स्वभाव तो देखो । अच्छा किया तो मैने किया । जब गेहूँ का पाक बिगड गया तब दोष भगवान को दे रहा है । भगवानने गेहू को बिगाड दिया । अच्छा हुआ तो मैने किया, विगड गया तो भगवानने बिगाडा । जीव की उल्टी विचार धारा है। यही उल्टी बुद्धि जीव को दुःख तथा उद्वेग का कारण बनती है।

कोई विद्यार्थी का जब अच्छा परिणाम आता है तो कहते है कि मैं प्रतिदिन १० घंन्टे वांचता था । इतना परिश्रम किया कि परिणाम अच्छा आना ही था । जब परिणाम अच्छा नहीं आता तब कहता है कि इतना परिश्रम किया लेकिन भगवान ने ही परिणाम मेरा सब गड़बड़ कर दिया ।

सत्य बात तो यहा है कि जिन्हे अच्छे - बुरे परिणाम की प्राप्ति में भगवान की कृपा या उन्हीं की इच्छा से जो भी हो रहा है होता है वे भगवान के आश्रित है और उन्हें दुःखी होने का अवसर नहीं आता । हमें जो भी कुछ हानि लाभ मिलता हो, जो भी सफलता मिलती है वह सब प्रभु की कृपा से मिलती है ।

''मारी मरजी विना रे, कोई थी तरणुं नव तोडाय...''

सब कुछ प्रभु की इच्छा से होता है, मै तो मात्र निमित्त हूं । इस तरह की समझ जिस जीव में आजाय वह जीव सदा आनंद में रहता है।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर जलझीलणी एकादशी के अवसर पर श्री गणेशजीकी शोभायात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में भाद्रपद कृष्ण-११ जलझीलणी एकादशी को श्री गणेशजी की शोभायात्रा पारंपरिक रुप से हर्षोल्लास के साथ निकाली गई थी.

दोपहर को १२-३० बजे प.पू. लालजी महाराजश्री पार्षदो के साथ मंदिर पधारे थे। पश्चात् श्री गणेशजी की आरती उतारकर श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल के साथ शोभायात्रा का प्रारंभ हुआ था। शोभायात्रा में कीर्तन भक्ति के साथ सभी को दर्शन देते हुए लालजी महाराजश्री नारायणघाट मंदिर गए थे। यहाँ श्री गणेशजी की आरती उतारकर, गणेशजी को साबरमती नदी में नौका विहार कराकर, ठाकुरजी का जलाभिषेक अपने करकमलों से किया था। प्रासंगिक सभा में कालुपुर मंदिर के स.गु. महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी एवं नारायणघाट मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजीने प.पू. लालजी महाराजश्री की आरती उतारी थी।

शायं शोभायात्रा जब कालुपुर मंदिर पहुंची, तब प.पू. आचार्य महाराजश्री की उपस्थिति में सभी संत हरिभक्त तथा उत्सव मंडल ने खूब सुंदर कीर्तन-भक्ति की की थी एवं भव्य उत्सव हुआ था। पू. महंत स्वामी के मंडल के संत कोठारी जे.के. स्वामी, ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी, भंडारी जे.पी. स्वामी, योगी स्वामी, भक्ति स्वामी, शा. विश्वविहारी स्वामी तथा हरिचरण स्वामी (कलोल) एवं नटु स्वामी आदि संत मंडलने प्रेरणात्मक सेवा एवं व्यवस्था का सुंदर आयोजन किया था। (शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट में श्री नरनारायणदेव महिला मंडल द्वारा आयोजित कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायणमंदिर नारायणघाट द्वारा श्रीमद् सत्संगीजीवन सप्ताह पारायण का सुंदर आयोजन दिनांक २१-य-२०१६ से दिनांक २७-८-२०१६ पर्यंत कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर के पू. सांख्ययोगीनी बहनों के वक्तापद पर हुआ था। सांख्ययोगीनी बहनोने बहुत सुंदर कथा अमृत का पान कराया था। नारायणघाट मंदिर में २० वर्ष पूर्व प.पू.अ.सौ गादीवालाश्री की आज्ञा से महिला मंडल की स्थापना हुई थी। प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने उसी मिला मंडल को श्री नरनारायणदेव महिला मंडल नाम देकर उत्तरोत्तर प्रगति के लिए आशीर्वाद दिये थे।

दोपहर १-०० से ४-०० पर्यंत कथा के समय पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की शुभ उपस्थिति में हजारो बहनोने कथा का सुंदर लाभ प्राप्त किया था। ७ दिन तक प्रसाद की सुंदर व्यवस्था यजमान हरिभक्तोंने की थी. यहाँ के महंत स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी एवं उनके संतमंडल ने खूब सुंदर व्यवस्था का आयोजन किया था। कई हरिभक्तोंने तन-मन एवं धन से सेवा कर जीवन धन्य बनाया था।

(शास्त्री दिव्यप्रकाशदास, नारायणघाट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा २३ वाँ ज्ञानसत्र एवं जलझीलणी एकादशी की शोभायात्रा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुल की पूर्ण प्रसन्नता से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणपुरा में दिनांक ३-८-२०१६ से दिनांक २७-८-१६ तक २३ वाँ ज्ञानसत्र स.गु. महंत शा.स्वा. हरिओमप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर प.भ. बाबूभाई वी. पटेल तथा वसंतीबहन बाबूभाई पटेल (हीरापुरवाले) के मुख्य यजमान पद पर धामधूम से संपन्न हुआ। प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाश्री की बार कथाका श्रवण करने पधारे थेस्त्र। प.पू.असौ. गादीवालाश्री भीएक दिन कथा श्रवण करने पधारी थी एवं यहाँ यजमान परिवार के बहनो एवं महिला मंडल को दर्शन-आशीर्वाद देकर प्रसन्न किया था। कथा में आने वाले विविधउत्सवों को खूब उत्साहपूर्वक मनाया गया। दिनांक २७-८-१६ को पूर्णाहुति के अवसर पर प.पू.ध.धु.

आचार्य महाराजश्री सुबह १०-३० बजे पधारे थे एवं कथा की पूर्णाहुति की आरती कर बिराजमान हुए थे । यजमान परिवार एवं सह यजमान परिवारने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन एवं आरती उतार आशीर्वाद प्राप्त किए थे । प्रासंगिक सभा में पू.शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर), कृष्णवल्लभ स्वामी एवं माधव स्वामीने प्रसंगोचित प्रवचन किया था ।

अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने अमेरिका प्रवास के थकान को दिखाएं बिना, प्रसन्न चित्तसे सभी हरिभक्तो को सुंदर आशीर्वाद प्रदान किए थे । इस अवसर पर नारायणपुरा मंदिर के संत पार्षद श्री नरनारायण युवक महिला मंडलने सुंदर सेवा प्रदान की थी ।

<u>नारायणपुरा मंदिर में जलझीलणी उत्सव</u>

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से भाद्रपद कृष्णा-११ जलझीलणनी एकादशी को श्री गणेशजी का पूजन यजमान अ.नि. जसुबा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट परिवार के प.भ. भास्करभाई एवं राजदीप आदिने ब्राह्मणों की उपस्थिति में किया था । नारायणपुरा मंदिर से दोपहर २-०० बजे श्री गणेशकी शोभायात्रा धून-भजन के साथ नीकली थी । नारायणघाट मंदिर पहुंचते ही प.पू. लालजी महाराजश्री के कर करमलों से गणेशजी की पूजन आरती की गई थी । प.पू. लालजी महाराजश्रीने ठाकुरजी को नौकाविहार करा कर, साबरमती में जलाभि,क किया था । रात्रि को यजमान परिवार के यहाँ ठाकुरजी के समक्ष संप्रदाय के सुप्रसिद्ध कलाकार श्री हसमुखभाई पटेल एवं साथी कलाकारों ने सुंदर कीर्तन भक्ति की थी । शा. माधव स्वामी की प्रेरणा से समस्त नारायणपुरा सत्संगने सुंदर सेवा प्रदान की थी ।

(कोठारी मयूर भगत)

ईडर में सावन महीने में सत्संग सभा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा ईडर महंत स्वामी जगदीशप्रसाददासजी की प्रेरणा से संपूर्ण श्रावण महीने के दौरान इडर देश के कई गाँवो में निज मंदिर के संतो द्वारा सत्संग सभा का सुंदर आयोजन किया गया था । जिस में रतनपर, फिचोड, साबलवाड, थुरावास, अरोडा (जुना), नेत्रामली, कुकडिया, मणियोर ओर हिंगलाज आधिगाँव में कोठारी सत्यसंकल्पदास, शा. अजयप्रकाशदास आदि साधु-संतोने कथा वार्ता द्वारा सर्वोपरि श्रीहरि का महिमा वर्णन किया था । इस से गाँव में हरिभक्तों को भी सुंदर लाभ मिला था । (सत्यसंकल्प स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल में उत्सव मनाये गए

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा बोल मंदिर के संत स्वामी धर्मसुतप्रियदासजी एवं स्वामी परोपकारदासजी की प्रेरणा से यहाँ के सभी हरिभक्तों एवं श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा अपने संप्रदाय के प्रत्येक छोटे बड़े उत्सव खूब उत्साह पूर्वक मनाया जाते हैं ।

आषाढ एवं सावन महीने में ठाकुरजी के समक्ष भव्य अलौकिकि विविधप्रकार के हिंडोला का दर्शन कराया गया था। जन्माष्टमी की रात ९-०० बजे से १२-०० बजे तक संत-हरिभक्तों ने कीर्तन भक्ति की थी । रात को १२-०० बजे जन्मोत्सव की आरती उतारी गई थी । इस अवसर पर हरिभक्तों ने दर्शन का बहुत सुंदर लाभ प्राप्त किया था ।

दिनांक ९-९-१६ से दिनांक ११-९-१६ के दौरान त्रिदिनात्मक ज्ञानसत्र के अवसर पर वणझर, बावला, एप्रोच, पेथापुर के संतो ने विविधविषयो पर संप्रदाय लक्ष्यी जान प्रदान किया था । स्वामी परोपकारदासजी द्वारा संकलन किया हुआ संस्कारो का सिंचन करता नाटक परवरिश का परिणाम श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने बहुत सुंदर प्रकार से प्रस्तुत किया था । समापन में समूह महापूजा के पश्चात् युवक मंडल ने सुंदर इनाम देकर प्रोत्साहित किया था । (प्रवीण उपाध्याय)

विजापुर भाणपुर देश में साबरमती नदी के किनारे जलझीलणी एकादशी महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ आशीर्वाद से तथा स.गु. शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी (कलोल) की प्रेरणा से जलझीलणनी पवित्र एकादशी को साबरमती के तट पर विजापुर, भाणपुर, वजापुर, सांकापुरा, भीमपुरा, धनपुरा, रणछोडपुरा, जेपुर, हाथीपुरा, पीलवाई, खनुसा, आनंदपुरा एवं वेडा गाँव के सभी हरिभक्तों के सहयोग से धामधूमपूर्वक मनाया गया ।

इन सभी गाँव के हरिभक्तोंने ट्रेक्टर में ठाकुरजी की पालकी का शृंगार कर भाणपुर मंदिर संतो के साथ बैंड-बाजा लेकर धामधूम पूर्वक साबरमती किनारे सुबह ९-०० बजे विशाल संख्या में उपस्थित हुये थे । विशाल सभा में शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी एवं उनके संत मंडलने श्रीजी महाराज के अलग चरित्र सुनाए थे । नदी के पवित्र पानी में ठाकुरजी का अभिषेक कर सभी हरिभक्तों ने प्रसाद ग्रहण किया था । सभा संचालन घनश्यामप्रिय स्वामीने किया था । भोजन प्रसाद का समस्त आयोजन भाणपुर गाँव के युवक मंडलने किया था। (कोठारीश्री विजापुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर जयपुर का १०१ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा जेतलपुर मंदिर के महंत स.गु. स्वामी आत्मप्रकाशदासजी तथा स.गु. शास्त्री पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से एवं यहाँ के महंत शा. स्वा देवस्वरुपदासजी के मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मदिर जयपुर का १०१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव दिनांक २२-८-१६ को खूब धूमधाम से मनाया गया । इस अवसर के उपलक्ष में दिनांक २१-८-१६ को रात्रि सत्संग सभाका सुंदर आयोजन किया गया था ।

दिनांक २२-८-१६ को प्रात: मंगला आरती के पश्चात ठाकुरजी का पूजन अर्चन कर षोडषोपचार महाभिषेक हुआ था । समूह महापूजा में कई हरिभक्तोने लाभ लिया था । महापूजा की पूर्णाहुति की आरती संतो द्वारा हुई थी । अन्नकूट की आरती के पश्चात प्रासंगिक सभा में संतो की अमृत वाणी का सुंदर लाभ समस्त हरिभक्तों ने लिया था ।

इस अवसर पर कालुपुर, जेतलपुर, छपैया, अयोध्या, प्रयाग, अंजली, वाली, धरियावद, मथुरा आदि धाम से संत-महंत पधारे थे । बाल धून मंडल का वार्षिकोत्सव धामधूम पूर्वक मनाया गया था । इस पाटोत्सव के मुख्य यजमान प.भ. पूंजाभाई शांतिलाल पटेल (जयपुर) परिवारने सुंदर लाभ प्राप्त किया था । बडे-छोटे सभी हरिभक्तोंने देवदर्शन एवं संत आशीर्वाद प्राप्त किया था एवं समग्र प्रसंग में सेवा प्रदान की थी । सभी हरिभक्त प्रसाद लेकर धन्य हुए थे । समग्र आयोजन महंत स्वामी के मार्गदर्शन के अनुसार जयपुर के सत्संग युवक मंडल ने किया था ।

(पार्षद तुरण भगत - जयपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर में विविधउत्सव मनाए गए

श्री नरनारायणदेव गादी के हस्तक श्री स्वामिनारायण मंदिर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सावन महीने के दौरान श्रीमद् भागवत कथा कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने की थी । ठाकुरजी के समक्ष सावन महीने में कोठारी स्वामी एवं राजूभाई भावसार, विपुलभाई एन. पटेल, यशवंतभाई बारोट, जिग्नेशभाई सी. भावसार एवं ट्रस्टीश्री किरीटभाई भावसार आदि भक्तोंने हिंडोला बनाकर खूब सुंदर सेवा कर, अलौकिक सुंदर हिंडोला में भगवान श्रीहरि को झुलाया था । भाद्रपद कृष्ण-११ को मंहत स.गु.शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी, कोठारी शा.स्वा. विश्वप्रकाशदासजीने श्री ठाकुरजी को लेकर उत्सव मंडल के साथ गाँव में घर-घर पदार्पण किया था । पश्चात नागधरा सरोवर में ठाकुरजी को नौका विहार कराया था । पश्चात प्रसादी के लालजी महाराज एवं श्री हरिकृष्ण महाराज का अभिषेक कर हरीभक्तों ने सुंदर लाभ लिया था । ककडी का प्रसाद लेकर हरिभक्त धन्य हुए थे ।

शोभायात्रा में ट्रस्टी श्री नवीनभाई मोदी, श्री किरीटभाई भावसार, श्री भालचंदभाई भावसार, श्री दिलीपभाई भावसार, श्री भगवानदास पटेल एवं श्री संजयभाई मोदी आदि कई हरिभक्तोंने उत्सव में भाग लिया था। (महंत शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी - वडनगर)

अहमदावाद श्री नरनारायणदेव देश आधिन बाडमेर जिला (राजस्थान) में प्रथम मंदिर का खात पूजन

इष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी की प्रेरणा से राजस्थान की खरुवा गाँव में अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव आधीन बाड़मेर जिला में प्रथम श्री स्वामिनारायण मदिर का खात मुहूर्त अपने प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कर कमलों से विधिवत रुप से संपन्न हुआ ।

इस अवसर पर रात्रि जागरण एवं एक दिवसीय कथा का सुंदर आयोजन हुआ था । जिस में शा.स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी ने कथा वार्ता का सुंदर लाभ प्रदान किया था । इस अवसर पर अहमदाबाद कालुपुर मंदिर से कोठारी जे.के. स्वामी (ट्रस्टी बोर्ड सभ्यश्री) एवं इडर तथा नाथद्वारा से संतगण पधारे थे । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने

इस विस्तार में अपना सत्संग खूब विस्तार करें एवं यह मंदिर में हरिभक्त खूब सेवा करें और भगवान श्रीहरि को प्रसन्न करें ऐसा आशीर्वाद दिया था । मंदिर के भूमि दाता मंगानी परिवार ने प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-अर्चन कर आशीर्वाद प्राप्त किए थे । हजारो राजस्थान के हरिभक्त प.पू. आचार्य महाराजश्री के चरण स्पर्श एवं दर्शन कर धन्य हुये थे । (साधु दिव्यस्वरुपदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर उंझा (ब्राह्माण शेरी)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से एवं समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से यहाँ उंझा श्री स्वामिनारायण मंदिर में सत्संग खूब सुंदर रुप से चल रहा है । यहाँ चातुर्मास में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से कालुपुर मंदिर के संत पधारे थे । संतोने सावन महीने में प्रातः श्रीमद् सत्संगिजीवन की एवं रात्रि को श्रीमद् भागवत दशम स्कंधकी कथा की थी । कथा के वक्तापद पर घनश्याम स्वामी बैठे थे । कथा के पश्चात स्वामी केशवचरणदासजी ने श्री नरनारायणदेव में निष्ठा की बातें की थी । वाली मंदिर के कृष्णप्रसाद स्वामी की उपस्थिति में श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव हरिभक्तों ने कीर्तन भक्ति के साथ धामधूम पूर्वक मनाया था। (पटेल गोविंदभाई जेठालाल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर लालोडा पदयात्रा तथा जलझीलनी उत्सव

सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आशीर्वादात्मक आज्ञा से तथा लालोडा धाम के पू.स.गु. शास्त्री स्वामी घनश्यामजीवनदासजी की प्रेरणा से भाद्रपद कृष्ण-११ जलझीलनी एकादशी को श्री ठाकुरजी एवं श्री गणेशजी की शोभायात्रा नगर में निकली थी । ठाकुरजी को जलविहार करा कर सभी ने धून-भजन एवं कीर्तन किए थे । इस दिवस पर लालोडा धाम से मू.अ.मू.स.गु. गोपालानंद स्वामी की प्राकट्य भूमि टोरडा धाम तक पदयात्रा आयोजित की गई थी । जिस में विशाल संख्या में संत एवं हरिभक्त जुडे थे ।

स.गु. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी एवं स्वामी बालकृष्णदासजी के मार्गदर्शन से समग्र आयोजन हुआ था । (भूमित पटेल)

मानिकपुर (चौधरी) गाँव श्री गणेश चतुर्थी उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवं आशीर्वाद से माणिकपुर (चौधरी) श्री स्वामिनारायण मंदिर में भाद्रपद कृष्ण-४ को गणेश चतुर्थी के अवसर पर श्री गणपति यज्ञ किया गया था । जिस में १२ हरिभक्तों ने लाभ लिया था । मुख्य यजमान के रुप में चौधरी कांतिभाई केसाभाई एवं चौधरी डाह्याभाई शंभुभाई रहे थे । पूर्णाहुति के अवसर पर श्री गणपति दादा को गुड के चुरमा के लड्डू का अन्नकूट किया गया था । इस अवसर पर गांधीनगर सेक्टर-२ मंदिर के महंत शा.छोटे पी.पी. स्वामी एवं सिद्धेश्वर स्वामीजीने श्री गणपतिजी का महिमा बताया था । (श्री नरनारायणदेव युवक मडल की तरफ से चौधरी डाह्याभाई)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर मूली जन्माष्टमी का उत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा एवं आशीर्वाद से तथा मूली मंदिर के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी की प्रेरणा से सावन कृष्णा-८ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का परंपरात उत्सव प.पू. लालजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में उत्साहपूर्वक मनाया गया । पवित्र सावन महीने में आयोजित कथा स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी के वक्ता पद पर हुई थी ।

प.पू. लालजी महाराजश्री ने यहाँ पधारकर प्रथम राधाकृष्णदेव, हरिकृष्ण महाराज के दर्शन किए थे । पश्चात सभा में विराजमान हुए थे । ठीक इसी समय झालावाड के किसान बारिश का आतुरता पूर्वक इंतजार कर रहे थे । और धर्मकुल के आगमन मात्र से ही बरसात का आगमन हुआ था । और जिससे समग्र क्षेत्र के किसान खूब आनंदित हुए थे । स्वयं श्रीहरि के स्वरुप जहाँ हो वहाँ सब सुखकारी और मंगलमय होता है, इसका एक प्रत्यक्ष परिचय था ।

प.पू. लालजी महाराजश्री ने समस्त सभा को आशीर्वाद प्रदान किया था । इस अवसर पर अहमदाबाद, सुरेन्द्रनगर, रतनपर, रंजीतगढ, चराडवा आदि धामों से संतोने एवं सांख्ययोगी बहनें पधारी थी । सभा का संचालन शैलेन्द्रसिंह झालाने खूब सुंदर पूर्वक किया था । समग्र व्यवस्था में कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी, कोठारी व्रजभूषणदासजी, हरिकृष्ण स्वामी एवं भरत भगत जुडे थे । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से दिनांक २२-८-१६ से दिनांक १-९-१६ पर्यंत सुरेन्द्रनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में स.गु. श्री नित्यानंद स्वामी रचित भक्तिचिंतामणी के पंचम प्रकरण की कथा पूजारी स्वामी त्यागवल्लभदासजीने की थी । जिसके यजमान के रुप में सांख्ययोगीनी कमलाबा, कोकिलाबा एवं उषाबा की प्रेरणा से कीर्तिबहन कांतिलाल शाह(कपडवंज) परिवार रहा था । समग्र सभा का संचालन कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदास तथा शास्त्री स्वामी प्रेमवल्लभदासजीने किया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण हिंदु टेंपल (आई.एस.एस.ओ.) ओकलेन्ड न्यूजीलेन्ड

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की संपूर्ण प्रसन्नता से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर, ओकलेन्ड में सावन कृष्ण-८ को श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव का भव्य आयोजन किया गया था । मंदिर में हरिभक्तों द्वारा जन्मोत्सव के अवसर पर कीर्तन हुए थे तथा शास्त्रीजी द्वारा भगवान की लीला के चरित्र की कथा की गई थी । रात्रि १२-०० बजे कृष्ण जन्मोत्सव की आरती खूब धामधूम पूर्वक हुई थी । उत्सव के दौरान सेवा करने वाले हरिभक्तो में ठाकुरजी के वस्त्र के यजमान प.भ. जैमीनभाई, श्रुतिबहन, महाप्रसाद के यजमान सुरेन्द्रभाई अमीन, राघे, पोपली, भावेश हिराणी आदि भक्तोने खूब सुंदर सेवा की थी । ८०० से अधिक हरिभक्तोंने उत्सव का दर्शन किया था । सावन महीने में ठाकुरजी के कलात्मक हिंडोला में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल-युवती मंडल की सेवा सराहनीय थी । महिलाओं ने रात में जागरण कर भगवान के लिए सुंर फूलों के वस्त्र बनाए थे । संपूर्ण महोत्सव का संचालन श्री निखिल राबडियाने किया था । सावन महीने में शिव पूजा का सुंदर आयोजन किया गया था । श्री गणेश चतुर्थी को श्री गणपति दादा का पूजन एवं जलझीलनी एकादशी को विसर्जन-पूजा-अभिषेक बहुत सुंदर प्रकार से हुए थे । इस पूजन के यजमान कैलाश यादव रहे थे । समग्र उत्सव के दौरान मंदिर के निर्माणकर्ता प.भ. डॉ. कांतिभाई पटेल खास उपस्थित रहे थे । बडे-छोटे सभी हरिभक्तोने सेवा कर श्रीहरि और समग्र धर्मकुल को प्रसन्न किया था। (तुषारभाई शास्त्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर विहोकन (आई.एस.एस.ओ. - अमेरिका)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से यहाँ के मंदिर के महंत स्वामी नारायणदासजी की प्रेरणा से जन्माष्टमी एवं जलझीलनी एकादशी खूब हर्सोल्लासपूर्वक मनाई गई .

जन्माष्टमी की रात्रि में सभी हरिभक्तों ने रात को ९-०० बजे से १२-०० बजे तक कीर्तन-भजन एवं रास खेले थे । स्वामी ने श्रीकृष्ण जन्मोत्सव की कथा सुनाई थी । एवं रात्रि को १२-०० बजे जन्मोत्सव की आरती कर खूब धामधूम से जन्मोत्सव मनाया गया था ।

जलझीलमनी एकादशी के अवसर पर ठाकुरजी को नौका विहार कराया गया था एवं कीर्तन भक्ति की गई थी । स्वामीजीने कथाकर हनुमान चालीसा की आरती की थी ।जेतलपुर धाम से पधारे ब्र.स्वा. पूर्णानंदजी ने सावन महीने में शिवजी का पूजन अभिषेक एवं गणेश चतुर्थी को श्री गणपतिजी का पूजन कराया था ।९-११ में दिवंगत आत्माओं की शांति के लिए विहोकन टाउन द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि के कार्यक्रम में उपस्थित रहकर दिवंगतों की आत्मा की शांति के लिए प्रार्थना की थी ।

(बलदेवभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम (आई.एस.एस.ओ. - यु.के.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवं प.पू. बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर स्ट्रेधाम का २१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव धामधूमपूर्वक मनाया गया ।

पाटोत्सव के प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का आयोजन किया गया था । जिसके वक्तपद के रुप में प्रयागराज से पधारे महंत स्वा. नारायणस्वरुपदासजी, शा.स्वा. श्री हरिगुणदासजी तथा नारायणघाट मंदिर से पधारे शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी रहे

थे।

दिनांक २१-८-१६ को पारायण के उपलक्ष्य में पोथी यात्रा मंदिर के पास आए हुए ग्राउंड से अपने मंदिर के कथा स्थल तक आयोजित की गई थी। दिनांक २१ से २७ तक ७ दिन पर्यंत कथामृत के पान के साथ समूह महापूजा-ठाकुरजी का महाभिषेक एवं अन्नकूट का बहुत सुंदर आयोजन किया गया था।

इस अवसर पर प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से भक्तों को सत्संग का लाभ देने आए प्रयाग मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी तथा अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव के पुजारी ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी तथा शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी (लेस्टर), शा. स्वा. मुक्तप्रकाशदासजी, स्वा. रामानुजदास (प्रयागराज) आदि संतोने पधारकर भगवान की उपासना एवं धर्मकुल के महात्म्य की बात की थी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से दिनांक २७-८-१६ को पू. संत एवं पू. ब्रह्मचारी स्वामीने ठाकुरजी का महाभिषेक षोडशोपचारपूर्वक किया था । ७ दिन तक हरिभक्तो के द्वारा सभी हरि भक्तों को प्रसाद दिया गया था। प्रेसीडेट अमृतभाईने आभार विधिकी थी । सभा संचालन जयेशभाई वाघेलाने किया था।

(नारायणस्वरुप स्वामी, प्रयाग मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर क्रोली (गेटवीक-यु.के.)

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवं पूज्यपाद बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशईर्वाद एवं सदा प्रसन्नता से प्रयागराज से पधारे महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी तथा संत मंडल की उपस्थिति में श्री स्वामिनारायण मंदिर, क्रोली मंदिर का दशाब्दी महोत्सव धामधूम से मनाया गया।

प्रसंग के उपलक्ष्य में श्रीमद् भागवत दशम स्कंधसप्ताह पारायण शा.स्वा. श्रीहरिगुणधासजी के वक्तापद पर खूब सुंदर रुप से संपन्न हुई थी। दिनांक ५-९-१६ को प्रसंग के उपलभ्य पोथी यात्रा का आयोजन किया गया था। गणेश चतुर्थी की वजह से समूह गणपति पूजन का भी आयोजन हुआ था। समग्र पूजन विधिसोहम महाराजने करवाई थी। पूजन में कई हरिभक्तोंने खूब सुंदर लाभ प्राप्त किया था।

दिनांक ८-९-१६ को समूह में सुंदरकांड के पाठ का आयोजन किया गया था। इस अवसर पर दिनांक १०-९-१६ को गेटवीक क्रोली के हरिभक्तों को दर्शन एवं आशीर्वाद का लाभ प्रदान करने के लिए हमारे लाडले धर्ममार्तंड विश्ववंदनीय प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री पधारे थे । स्वागत उत्सव सभी हरिभक्तोने मिलकर खूब धामधूम से किया था । महिलाओं ने भी सर खूब उत्साहपूर्वक शोभायात्रा में भाग लिया था। महाराजश्री के आगमन से यहाँ का सत्संग समुदाय बहुत ही उत्साहित था। महाराजश्री के साथ अहमदाबाद मंदिर के कोठारी जे.के. स्वामी एवं पार्षद वनराज भगत सेवा में उपस्थित थे।

इस अवसर पर विंल्सडनसे पधारे युवक मंडल के युवा हरिभक्तों द्वारा रात को कीर्तन-भक्ति-आराधना का प्रोग्राम किया गया था। युवाओं ने नंद संत के किर्तन सुंदर संगीत के साथ गाकर देव-आचार्य महाराज एवं हरिभक्तों को प्रसन्न किया था।

दिनांक ११-९-२०१६ को मंदिर में विराजमान देवों का महाअभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महारजाश्री के कर कमलों से वेदोक्त विधिसे षोडशोपचार पूजन के साथ किया गया था। हजारों हरिभक्तोंने ऐसे महाअलौकिक अवसर पर दर्शन कर जीवन धन्य बनाया था। अभिषेक के पश्चात मंदिर के सत्संगी बहनों द्वारा बनाए गये विविधव्यंजन का अन्नकूट उत्सव कीया गया था। पश्चात पूज्यपाद आचार्य महाराजश्री के कर कमलों से अन्नकूट की आरती की गई थी.

अंत में पारायण की पूर्णाहुति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का पूजन एवं आरती, संतो का पूजन, यजमानों का सम्मान, मेहमानों का स्वागत-सम्मान एवं पस्चात विविधधामों से पधारे संतो जिस में प्रयागराज महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी तता शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), ब्र. स्वा. राजेश्वरानंदजी (अहमदाबाद कालुपुर पूजारी), शा.स्वा. सत्यप्रकाशदासजी (लेस्टर), शा.स्वा. दिव्यप्रकाशदासजी (नारायणघाट), शा.स्वा. मुक्तप्रकाशदासजी तथा अन्य साधु संतो ने प्रवचन द्वारा धर्मकुल के महत्व की प्रसंगोपात बातें की थी । अंत में पूज्यपाद महाराजश्री के आशीर्वाद का लाभ सभी को मिला था। महाराजश्री की मधुर वाणी से छोटे बाल मंडल के बच्चे

तथा युवा एवं बुझुर्ग खूब उत्साहित हुए थे। प्रत्येक हरिभक्त ने दर्शन तथा महाराजश्री के साथ बैठने का बहुत सुंदर लाभ प्राप्त किया था। और जिससे सभी हरिभक्तों को खूब प्रसन्नता प्राप्त हुई थी।

छोटे-बड़े सभी हरिभक्तों ने विविधसेवा के यजमान बन कर अलौकिक लाभ प्राप्त किया था। सभी हरिभक्तों की सेवा प्रेरणा रुप थी । ७ दिनों तक सभी हरिभक्तों को महाप्रसाद दिया गया था। और महाप्रसाद की सेवाकर महिला मंडल में देव, आचार्य तथा संतो की प्रसन्नता प्राप्त की थी। मंदिर के पुजारी मनजीभाई तथा संतोने मिलकर ठाकुरजी का सुंदर प्रकार से शृंगार किया था एवं हरिभक्तों को दर्शन का लाभ दिया ता।

अंत में मंदिर के प्रेसिडेंट जीतुभाई पटेलने आभारविधिकरते हुए लंदन से बोल्टन, स्ट्रेधाम, विल्सडन, हेरो, वुलवीच, स्टेनमोर, लेस्टर, ब्राईटन, कार्डिफ से पधारे सभी भक्तों को याद कर आभार विधिकी थी। सभा संचालन उमेशभाई पटेलने खूब सुंदर प्रकार से किया था । (नारायणस्वरुप स्वामी - प्रयाग मंदिर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ब्राईटन यु.के.

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से पूज्यपाद बड़े महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से ब्राईटन श्री स्वामिनारायण मंदिर का १७ वां वार्षिक पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से संत मंडल के साथ पधारे प्रयागराज मंदिर के महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी तथा संतो की उपस्थिति में धामधूम से मनाया गया।

दिनांक १६-९-१६ को पारायण के उपलक्ष्य में पहुंची यात्रा मंदिर के पास के मेदान से निज मंदिर में कथा स्थल तक निकाली गई थी। १६-९ से १८-९ पर्यंत त्रिदिनात्मक श्रीमद् सत्संगिजीवन अंतर्गत बालचरित्र-वनविचरण की सुंदर कथा शास्त्री स्वामी हरिगुणदासजी के वक्तापद पर संपन्न हुई थी।

दिनांक १७-९-१६ को वुलवीच से पधारे युवक मंडल में भावि पाठक तथा साथी युवानों द्वारा सुंदर कीर्तन भक्ति का कार्यक्रम यहाँ किया गया था।

दिनांक १८-९-१६ को प्रयागराज मंदिर महंत स्वामी नारायणस्वरुपदासजी तथा वक्ता श्री हरिगुणदासजी, शा. मुक्तप्रकाशदासजी तथा साधु रामानुजदास आदि संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोपचार अभिषेक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से धूमधाम से संपन्न हुआ था । हरिभक्तोंने अभिषेक का दर्शन कर जीवन धन्य बनाया था।

पश्चात पारायण की पूर्णाहुति, पोथी पूजन, वक्ता पूजन, आरती, संत पूजन, यजमानों कासम्मान, मेहमानो का स्वागत-सम्मान हुआ था । इसके पश्चात निज मंदिर में व्यंजनों के सुंदर अन्नकूट का आयोजन किया गया था। अन्नकूट की आरती संतो एवं यजमानो ने की थी । कई हरिभक्त अन्नकूट दर्शन कर धन्य हुए थे। उत्सव के दौरान प्रत्येक दिन सभी हरिभक्तों को महाप्रसाद दिया जाता था। भोजन की सेवा यहाँ के महिला मंडल ने खूब सुंदर प्रकार से की थी।

३ दिनों तक संतो द्वारा ज्ञान आशीर्वाद सभी को मिला था। बड़े छोटे सभी हरिभक्तों की सेवा भी खूब सराहनीय थी। पाटोत्सव में छोटी-बडी सेवा कर यजमान बने हरिभक्तों ने श्री नरनारायणदेव, प.पू. आचार्य महाराजश्री एवं संतो की प्रसन्नता प्राप्त की थी। ब्राईटन के मुख्य भक्त श्री विरजीभाई रुपानी मुख्य यजमान बनने का लाभ प्राप्त किया था । उमेशभाई पटेलने सभा का संचालन किया था। प्रेसिडेंट श्री प्रकाशभाईने सुंदर व्यवस्था की थी।

प्रयागराज से पधारे स्वामी तथा संतोने प्रवचन द्वारा शिव की महिमा का वर्णन किया था।

चारो मंदिरों के पाटोत्सव में हरिभक्तों ने पधारकर सेवा की इसके लिए आई.एस.एस.ओ. यु.के. के प्रेसिडेंट श्री अशोकभाई हिरानी ने खूब आभार माना और इसी प्रकार उत्सव करते रहे ऐसी आशा व्यक्त कर सभा पूर्ण हुई थी।

(नारायणस्वरुप स्वामी - प्रयाग मंदिर)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) कालुपुर मंदिर में जलझीलणी एकादशी तथा वामन जयंती को ठाकुरजी की आरती उतारते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा नारायणघाट मंदिर में श्री गणपतिजी का पूजन करते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री । (२) सर्वोपरिधाम छपैया जाते समय रास्ते में आने वाले कोटा शहर में नूतन मंदिर तथा धर्मशाला का सूचित प्लान तथा शिलान्यास विधिकरते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) राजस्थान के बाडमेर जिला के खारवा गाँव में नूतन मंदिर की खातविधिकरते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(४) एप्रोच (बापूनगर) मंदिर में सत्संग शिबिर प्रसंग पर आशीर्वाद देते हुये प.पू. लालजी महाराजश्री ।(५) अमदावाद कालुपुर मंदिर में श्री बालस्वरुप घनश्याम महाराज विराजित अक्षरभुवन का जीर्णोध्धार कार्य खूब तेजगति से चल रहा है । उसकी सेवा जो करना चाहते है, वे अपनी सेवा की भेंट मंदिर के कोठार में देते सकते हैं ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

पर्यावरण के रखरखाव के लिये अपने म्युजियम में प.पू. आचार्य महाराजश्री प्रेरित "प्रिजर्वेशन प्लस" प्रोजक्ट के अनुलक्ष में क्रोली (यु.के.) मंदिर पटांगण में प.पू. बड़े महाराजश्री के संकल्प से वृक्षारोपण करते हुये प.पू. आचार्य महाराजश्री।

(१) कोलोनिया मंदिर में पाटोत्सव के प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. महाराजश्री । (२) ओकलेन्ड (न्युजीलेन्ड) मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव संपन्न । (३) स्ट्रेधाम मंदिर में प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये अमदावाद, मूली, प्रयाग मंदिर के महंत स्वामी । (४) सीडनी (ओस्ट्रेलीया) मंदिर में जन्माष्टमी उत्सव संपन्न।

कलन्डर (२०१६-१७)

प.पू.ध.धु. आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से
श्री नरनारायणदेव युवक मंडल (अमदावाद) द्वारा नूतन वर्ष का कलन्डर प्रकाशित हो चुका है।

किंमत रु। १०/- प्रति कलन्डर

सेवार्थ संपर्क : ९८२४०३३१७५, ९६६२०२१८२९
Email : Ahmedabad@nndym.in
नोट : कम से कम २५० कलन्डर छपाया जायेगा।

कालुपुर श्री स्वामिनारायण मंदिर का नया नंबर : ८२३८००१६६६

Praful Kharsani